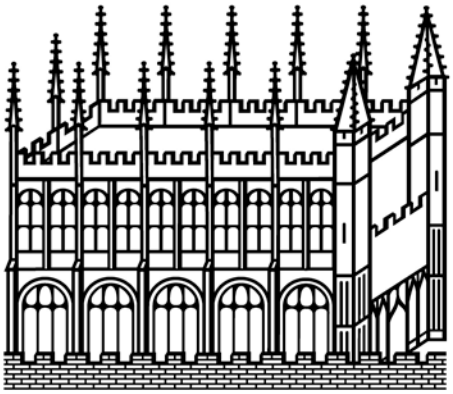


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

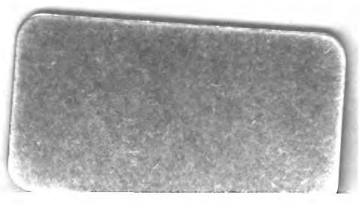
http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13.C.62 Hindi Sakha. I

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.



Śukabahattari.

शुकबहत्तरी

अर्थात्

शुक और प्रभावती का

सम्वाद

जिसमें

७२ कथा बुद्धिमान जनों के विनो

दार्थ अतिमनोहर ब्रजभाषा में और

उचित २ स्थानों पर सामैक श्लोक रचित हैं

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के यन्त्रालय में मुद्रित हुवा॥

जून

सन १८७४

श्रीगणेशायनमः॥प्रणम्य शारदा देवीं दिव्य ज्ञान समन्वितां॥मन
चिन विनोदार्थे कियते शुकबहत्तरीम्१ एकदेशीके विषे चंद्रकला ना
म नगर है राजा विक्रम सेन राज करता था तहां हरदत्त नाम सेठि व
स्से नाकी सुर सुंदरी स्त्री ताको पुत्र मदन ताको रतन सेन की बेटी
प्रभावती से व्याह किया। सो रूप लाव ण्य युक्त से मदन सेन
व्याह किया आसक्तह्वा दम भर जुदा न होना पिता मन में
चिन्ता करता पुत्र व्यापार नहीं करता स्त्री से आसक्त रहताहै इसे
क्षय रोग होगा यह समझ कर चिंता करने लग्यो इस हेतु में जो वा
तप्रसंग भई सो कहतेहैं चित दे सुनो एक विदेशी ब्राह्मण
विक्रम नाम था सो वह गंधर्व पर्वत को गयो उस पर्वत में एक
सिद्ध महा तपस्वी तप करते देखा जाके दंडवत कियो तब सि
द्ध ने बहुत आगत स्वागत किया तब ब्राह्मण ने कहा एक व
स्तु अपूर्व हो सो मुझे दीजिये किसवास्ते कि जो पृथ्वी भ्रमण करते
हों कथा वार्ता विनचित्त लगता नहीं और जो ऐसे ऋषी भ्र
के पास से भी नहीं पाऊं तो कहां से पाऊंगा जो ऋषि की से
वा करे तो वेहतर है सो निष्फल नहीं और श्लोक पीठ मर्दन
क्रिया श्लोक॥ अमोघा वासरे विद्युत अमोघं निशि गर्जितं
अमोघा च सतां वाणी अमोघं सिद्ध दर्शनं।ऐसा ब्राह्मण ने
कहा तब सिद्ध ने ध्यान किया उस वक्त एक सुवा एक सारो
सिद्ध की दृष्टि आई उन दोनों को जन्मान्तर की बातें जानवेमें
आई कि येदोऊ गंधर्व हैं कोई ऋषीश्वर के श्राप सों सुवा

योनि पाई है और वरषा ऋतु अनुग्रह किया जो पृथ्वी के विषे मनुष्य भाषा किया प्रभावती आगें रात्रि को उपदेश करै प्रात वह सुवा गंध मादन पर्वत पर जायगा तब शरीर को छोड़ेगा फिर गंधर्व होजायगा अब शुक अपना शरीर बेचै मुहर ५०० को तौथा ब्राह्मण को दिवावै तो पाप तें छूटै ऐसें सुवा सुवटी कों देव ऋषि ने कहा कि अरे शुक तू इस ब्राह्मण के संग जा और मुझरो का दान कर तेरा भला होगा इतना शुक सुन हाथ पर आ-बैठा तब ऋषि ने उस ब्राह्मण से कहा अय ब्राह्मण तू इसे ले-जा जो कोई तुझै ५०० मुहरें दे उसे दीजो मेरी आज्ञा से तेरा भला होगा ऐसे कहा तो ब्राह्मण सुवा को ले आज्ञा मांग चला और दौर हो आयो फिर शुक ने कथा वार्ता बहुत किया ऐसी वार्ता-को करै विक्रम ब्राह्मण के घर चन्द्र कला नगरी में आया ह्य-थमें पिंजरा को लिये हुए श्री दत्त की हाट के आगे विश्राम कि-या ना पीछें बहुत शुक सुंदर श्लोक कहत भयो अपूर्व वार्ता हि-त उपदेश शास्त्र पुराण वेद कला ज्ञान विज्ञान कहने लगा।
तब वह दत्त धा शुक की कथा सुन कर बहुत खुश हुआ और यह शोचा कि जो ब्राह्मण मुझे यह शुवा देतो मैं मांगू और-जो द्रव्य चाहै सो दूं ये विचार ब्राह्मण से बोला हे तपस्वी ये शु-क सारो मुझे दो तब ब्राह्मण बोला जो ५०० मुहर मुझे दोतो दूं तब शाह बोला १००० मुहर ले तब ब्राह्मण बोला ५०० से कम ज्या दे नहीं लूंगा मुझे सिद्ध की यही आज्ञा है तब साह प्रसन्न हो कर बहुत सी अतिथ्य अरु सेवा की और पांचसो मुहर दई।
और बहुत खुशी किया तब शाह शुक और सारिका अपने घर लेजा अपनी चित्र शाली में रखे बहुत दिन कथा वार्ता कहा करै तब एक दिन शुक ने सेठ को देखा तो बहुत उदास है शुक बोला है सेठ तू उदास क्यों है तब सेठ बोला कि मेरा बेटा मदन सेन है वह अपनी स्त्री प्रभावती से बहुत आसक्त है स-

णभर उससे जुदा होना नहीं इस मुझको बड़ा कलेश है और मैंतो बड़ दुखा और राजा विक्रमसेन की बेटी का ब्याह है। उसने यह आज्ञा दिया है कि तुम देशांतर से रत्न वस्त्र भूषण अनेक भांति के ल्याओ अगर न जाऊंतो राजा दंड देवै और जाने की ताकत नहीं इससे निहायत चिंता में रहता हूं तासों शुक अब कहो सो करूं तब शुक बोला कि पिता चिंता मत करो मैं मदन सेन को बांधन करके तुम्हारे पास लाऊंगा ऐसा कह कर मदन सेन के घर गया जाकर आशीर्वाद दिया मदन सेन प्रभावती ने बहुत आगत स्वागत किया तब शुक ने अनेक वार्ता किया और कहा कि पुत्र वही उत्तम है जो माता पिता की सेवा करै और आज्ञा प्रतिपालन करै और जो न करै तो नरक में पड़ै ऐसा श्रुति शास्त्र कहता है यह सुनि मदन सेन शुक को ले एकान्त में बैठ शुक सों पूछा कि पिता को चिंता किस बात की है सो तुम कहो तब शुक बोला कि एक सुनो कथा॥ एक चंपावती नगरी थी वहां सत्य शर्मा ब्राह्मण रहता था भार्या धर्मशीला रही जिस के बेटे देव शर्मा विद्यावंत गुनवंत थे परंतु माता पिता की सेवा न करते थे देशांतरों को गये विद्या बहुत पढ़ी महा तपसी हुए तीर्थ यात्रा बहुत किया एक दिन तीर्थ को जाते थे राह में धूप लगी तब सिरस के नीचे खड़े हुए उस वृक्ष के ऊपर बगली बगला बैठे थे सो वह बगली वे तपसी के मांथे पर बीठ किया तब ब्राह्मण का क्रोध हुआ देखतेही होने भस्म हुए तब ब्राह्मण आगे चला मन में सुख भा कि तपस्या पूरी हुई यह विचार के देश को गया एक ब्राह्मण के घर जाके कहा भिक्षा देहि यह बात ब्राह्मण की स्त्री ने सुनी भिक्षा ले चली उस वक्त पति ने जल मांगा वह पतिव्रता थी इससे जल लेके पति को दिया पीछे भिक्षा ले ब्राह्मण को देने लगी।

तब ब्राह्मण ने क्रोध किया कि मैं आप देदूंगा तब ब्राह्मणी बोली रे तपसी मैं बगुली नहीं हूं जो अपनी तपस्या दिखावै ऐसा कह बहुत निर्भत्सना किया तब ब्राह्मण ने जाना कि मैं जो पाप किया इससे प्रसिद्ध हुआ यह जान लज्जित हुआ भिक्षा लिया तब ब्राह्मणी ने कहा तू पापी है तेरे तपस्या का फल नहीं तब ब्राह्मणी फिर बोली तू बाराणसी जा तहां एक धर्म व्याधी नाम कसाई रहता है जा तू तब वह ज्ञानउपदेश करेगा सब बात को निर्भय उसको बतावेगा यह सुन ब्राह्मण वहां गया धर्म व्याधी सों खबर किया बासो मिलो देखा सो मांस बेचता है और हाथ लोहू में भरे हैं साक्षात जम राज का रूप है देख कर रामराम करने लगा और यह कहा कि ब्राह्मणी ने तुम्हारे पास भेजा है मुझे धर्म उपदेश करो तब उसने बहुत आगत स्वागत किया ब्राह्मण को घर में बिठाया फिर माता पिता की सेवा किया आज्ञा मांगी जो मुझे आज्ञा हो तो ब्राह्मण की सेवा करूं तब आज्ञा दिया कि ब्राह्मण को जिस में संतोष हो सो करो सेवा बहुत किया भोजन कर पाया चित्त स्थिर हुआ तब ब्राह्मण ज्ञान पूछा कि ब्राह्मणी को ज्ञान किस तरह हुआ और तुम को किस तरह हुआ सो कहो तब धर्म व्याधी बोला हे ब्राह्मण प्रथम तो अपने कुल का जो धर्म हो सो कर पराये धर्म को त्याग करै अच्छे प्रकार धर्म शास्त्र अनुसार माता पिता की सेवा करै सबको समान जानें सब दोष त्याग करै माता पिता और गुरु को ईश्वर जानें यह जान कर मोकों धर्म को ॥ ज्ञान है और वह ब्राह्मणी अपने धर्म को साधन करती है आज्ञा प्रति पालती है पति व्रत पालनों यह स्त्री को बड़ा धर्म है यासे उस को त्रिकाल ज्ञान है और तू वृद्ध ब्राह्मण माता पि-

ता को त्याग गृहस्था श्रम को त्याग किया है पित्र देवता को त्याग किया है इतने पर तप किया तो क्या किया तेरा अभी पाप मिटा नहीं इस से तुम से बोले सेभी पाप लगता है तू हमारे यहां आलिए आया इस से तोसे बोलना पड़ा अन्यथा तेरा मुख देखने योग्य नहीं तू माता पिता को त्याग आया है फिर ब्राह्मण ने कहा कि हम को उपदेश करो तब वह व्याधी एक श्लोक बोला ॥न पूजयेतिये पूज्यान् अमान्यान् मानयेत्तिते जायंते नियमा नास्ते स्वर्गे नयां तिते इस तरह व्याधी बोला बोध नहीं किया तब ब्राह्मण नमस्कार करके अपने घर आया याद किया गृहस्था श्रम में रहने लगा और माता पिता की सेवा दृढ़ता से मान करने लगा यह सुन मदन सैन बोला कि माता पिता कहेंगे सो करूंगा वचन न टालूंगा इस तरह शुक के कहने से पिता के पास गया नमस्कार की पिता ने बहुत आदर किया सुत को देख बहुत खुश हुआ हीरदत्त बोला हे शुक जिसके सपूत हों तिस्को चिंता किस बात की है इतना सुन पुत्र बोला हे पिता तुम को चिंता किस बात की है सो कहो तब हीरदत्त ने कहा कि राजा विक्रम सैन की बेटी का व्याह है तासों राजा आज्ञा दीहै कि वाहर आभूषण वस्त्र देशांतर से ले आवो आज से उन्नासी दिन शादी कहै सो चिंता है। द्वीपांतर से लाना अपने समान राजे कोई नहीं कैसा करै जिस से मैं दृढ़ हुआ यह बात सुनकर पुनि विनती किया कि जो मुझे आज्ञा करो मैं सब करूंगा तब सेठ निहायत खुश हुआ इस के बाद पिता पुत्र राजा के पास गये राजा से विनय किया कि हम को आज्ञा दीजै तब राजा बोला कि सेठ तुम रतन मोती माणिक द्वीपांतर से ले आओ आज से सत्तासी दिन व्याह के हैं तामें पांच सात रोज पहले आजाना तब मदन सेन ने कहा जो आज्ञा हुई है सो करैंगे और मेरी

इच्छा है रत्न उत्तम लाऊंगा तब राजा का सेवक और राजा
ने दी उन को सिरपाव दी उन्हों न बहुत दिलासा दिया बहु-
त द्रव्य जितना मागा तितना दिया घोड़ा रथ पया देबहु
त दिये आज्ञा दी कि सुबह होतेही सिद्ध करो विलंब मति
करो यह आज्ञा हुई तब सेठि मुजरा करि घर आया लेकि-
न पुत्रके सनेह में चिंता वान हुआ तिस पीछे मदन सेन
अपने घर आया प्रभावती सें कहा मैं परदेश चलूंगा तु-
म सीलसे रहना कोई बुरा न कहे मैं बहुत दिन पीछे आ
ऊंगा यह वार्ता प्रभावती सुन मुर्छा गई मदन सेन वेदन
किया और उस को चैतन्य किया तब प्रभावती ने कहा
मैंभी चलूंगी जो यहां तुम बीर मैं रहूंगी तो प्राण मेरे
यहां नहीं रहेंगे मदन सेन बोला कि राजा की आज्ञा है
भंग करूंगा तो मेरा प्राण नहीं है और दंड देगा तिससे
भार्या की आज्ञा नहीं मानूंगा तब प्रभावती बोली तो मैं
अकेली कैसें रहूंगी तब मदन सेन ने कहा कि सूवा और
सारा तुम्हारे पास रहेंगे कथा वार्ता रात दिन कहा करेंगा चिं-
तामत करो तब प्रभावती बोली तुम्हारी आज्ञा हो सो करूंगी
फिर मदन सेन पिता माता के पास गया और सूवा सारा पिता से
ले अपने घर ले आया प्रभावती ने परम संतुष्ट होकर राजी भई त-
ब मदन सेन शुक से कहने लगा मैं परदेश जाता हूं इसे बातें अ-
च्छी करते रहियो और रक्षा कीजियो कथा वार्ता सों बहुत दिन
बिताओगे पीछे एक वार्ता कान में कही कि नव यौवना है इ-
सका भरोसा नहीं स्त्री जाति है स्त्री के चरित्र कोई जानता
नहीं कोई बुरे का संग मत करने दीजो तीसरे रक्षा कीजो
तुम सर्वज्ञ हो शुक ने कहा चिंता मत करो तब मदन से-
न स्त्री को बहुत तरह से विनोद किया प्रभावती का मन
प्रसन्न किया पीछे मदन सेन सुबह होतेही माता पिता

को दंडवत कर परदेश को रवाना हुआ उस समय में वह
ने एक श्लोक पढ़ता भयो देन्यं प्रयुंहे मर्जुनं त्रसां कुंतलेयं
भरतं नलं चरा मंधत्वो वैसमरति प्रयाणे तस्यार्थ सिद्धि कु
शलं भवंती ॥ इस तरह मार्ग में चिंता करते देशांतर को
जाते भये जाकर रत्नादिक वस्त्रादिक लिये और जोजो रा-
जा ने आज्ञा किया था सब लिये और इधर घर में जो ।
कौतुक हुआ सो सुनो राजा विक्रम सेन का प्रधान ज-
यसेन तिसका बेटा विजय सेन वह बड़ा सुलक्षण औसु
भगना और बहुत गुन मान सीलवान काम देव की मूर्ति
विद्यावान था एक दिन घोड़े पर चढ़ महादेव के दर्शन
को चला उसे जो देखे सो मोहित होजावे मध्यान्ह के सम-
य निकला हरदत्त सेन के महल के नीचे खड़ा हुआ उस
वक्त प्रभावती की नजर पड़ी देख तेही बेहाल हुई काम
के वस हुई सिर के बाल नहाये सुखाती थी लट का पानी
उसके ऊपर पड़ा तो विजय सेन भी ऊपर देखने लगा ॥॥॥
और प्रभावती पर नजर पड़ी तो देखते ही वह भी काम करके
पीड़ित हुआ प्रभावती काम का तीर मार चली गई और विजय
सेन भी इस की चोट खाय चला गया और दोनो के चित्त में स-
नि याद गारी की लयन लग गई तब विरह के दुख से विजय सेन
ने एक श्लोक पढ़ा ॥ किं करो मिक्करा छामिरामों नास्ति मही तले।
कांता विरह जं दुःखं एको जानाति राघव ॥ इसी तरह फेर फेर
पढ़ता और जो चीज देखता उसमें प्रभावती की सूरत देखता
ऐसा वश्य भया कि कहीं चित्त नही लगता और किसी से कुछ
नहीं बोलता और दिल में विचारता कि रूपये औ वस्त्र जो चा-
हे सो ले प्रभावती की मुलाकात कोई करा देवे ऐसा रात दि-
न दिल में सोचता और फिकर करता और प्रभावती भी इ-
स तरह जी में चाहती और रात दिन सोच में रहती और वि-

के वियोग में रहती श्लोक॥सुवेष पुरुष दृष्ट्वा पितरं भ्रात
सुतं योनिः दृष्यति नारीणां सत्यं सत्यं वदाम्यहं ? ऐसा प्र-
भावती का मन काम के वस हुआ और जहां पर महल में
विजय सेन चिंता में बैठा था वहां पर एक मालिन फूलों की
डाली हाथों से भरी हुई ले आई और वह फूल विजय सेन
के आगे रक्खे और उस मालिन का नाम मोहनी था विजय
सेन ने उन फूलों को लिया परंतु भीतर की उदासी से कुछ न
खुशी नहुई तब मालिन बोली कि मैं तुम को उदास देखती
हूं और खुश तबीयत नहीं मालूम होती कि इसका क्या
सबब है ?। हमसे कहो अगर कोई स्त्री के हेत में हो तो मु
झसे कहो और आज्ञा दो उसे ले आऊं क्योंकि मुझे मोहनी
मंत्र आता है जिस पर नेह लगा है उसे मोह कर लाऊं तब
विजय सेन ने बड़ी खातिर की और यह पूछा कि मेरे मन
की बात तूने किस तरह से जानी तब मोहनी बोली हे विजय सेन
मैंने तुझे देखा कि चित्त तेरा उदास है विरह करके दुखी इससे
मैंने जाना कि किसी स्त्री से आसक्त हुआ है और यह बात मनमें जा
न ती थी और एक दिन उस के यहां गई भी थी सो वह भी उ-
ति दुखी चाह में थी तब मैंने उससे पूछा तब उसने कहा कि विज-
य सेन के दुख से दुखी हूं तब मैंने कहा विजय सेन के पास गई
थी वह स्त्री के मोह से वह तदुखी है तब मैंने कहा कि मैं माल-
नहूं जिसको तू चाहे तिसे अभी लाऊं यह सुन विजय सेन ने अ-
पने हाथ का गहना दिया और कहा प्रभावती मेरे मन में नि-
हायत बसी है उसे न मिलावे तो जो मांगे सो दूं तब मैंने क-
हा दिया मैं तुझे जरूर मिला दूंगी सो मैंने जाना कि तुझे भी
उस की चाह है तो परमेश्वर अच्छा करेगा और तेरी मुराद भी
पूरी होगी जब ऐसा कहा तब प्रभावती निहायत खुश हुई
और यह कहा मुझ से यह काम पूरा होगा तब ऐसा सारि-

काने सुना तो बोली इस मालन को घर से जल्द निकालो बड़ी खराब है तब सूवा बोला आदमी के पास आदमी आते हैं तू कौन है तू काहे को बकती है सारो ने मालन का बहुत तिरस्कार किया मदन सेन के वचन को प्रतिपाला परंतु जानवर है इसे कौन माने तब चुक विचार के बोला कि सारदा इसके पास मालिन और नायन बहुत आवती है इसें चिंता नहीं सारो तू समझती नहीं तब सारो ने कहा तू खुशामदी मन गावने की बातें करता है मैं तुझसे सच कहतीहूं फिर सारो बोली अबतुम चुप रहो तब मालन बोली प्रभावती मन में खुशी रक्खो जो आज्ञा करोगी सो करूंगी स्नान करो फूल पहरो सिंगार करो मनोर्थ पूरा करो और मदन सेनकी चिंता छोड़दो हम राजा की दासी हैं कभी घर कभी बाहर हमारा यही काम है तेरी आज्ञा में हूं जो कहोगी सो करूंगी यहजब कहा तो दिलगीरी दूर भई और स्नान कर गहना पहर फूल पहर और सोलह सिंगार कर गद्दी पर बैठी और मोहनी आगे बैठी और यह कहने लगी आज मुझे बड़ी खुशी हुई तब प्रभावती बोली कि तुझे किस बात का दुख है तब मालिनने कहा तुम अपना दुख कहो तो मैं अपना भी दुख कहूं प्रभावती की सखी बोली कि स्वामी परदेश है सुरंग जाकी चाह लगी हिये सो दुर्लभ सखीसंग श्लोक दरसन जनाय राग लजा कर रुह पख सो नप्या प्रय सह विषय मापि मां मरणं प्रारण वरं त्यक्तं १ इससे मरणा भला है ऐसा सखी बोली कि मन में ऐसा है अब तू अपना दुख बयान कर तब दूती बोली कि इस समय बसंत ऋतु है और तू नव जोवना है तुझे देख मुझको बड़ा दुख लगता है इससे आगा तू मेरा कहना माने तो एक बात कहूं तब प्रभावती बोली जो तेरे मन में बसा है उसे मैं जानती हूं राजा के प्रधान का बेटा बिजे सेन तेरे म-

न मे वसे है मालनी ने कहा जो कहै तो तुझै उसे मिलादूं प्र
भावती ने कहा अगर मुझै उस से मिलादे तो तुझे बहुत सा द्र-
व्य दूंगी मालनी बोली जहां पर तू कहे वहां पर उसे ले आ-
ऊं प्रभावती बोली मालन तू विजै सेन से जाकर यह कह आ
ज पहर रात गये सिंगार का शहर बाहर एक सिवाला है सो॰
वहां आ जो और मैभी चलूंगी ऐसे तू कहना तब दूती प्र-
सन्न हुई और प्रभावती ने उसे पांच मोहर दी वह लेकर वि
जय सेन के पास गई और विजै सेन से कहा कि आज प्र-
भावती को प्रबोध है और उसने कहा है कि पछांही तरफ़॥
एक सिवाला है और वहां सून सान है वहां उसे ल्याऊंगी अ-
ब तू अपना मनोरथ पूरा कर यह बात सुनतेही बहुत खु-
शहुवा अपने गले की मोती की माला उतार कर मोहनी को
दी तब इसने कहा मैं तो काम कर आई लेकिन इस में विघ-
न बहुत से हैं देर मत करै क्योंकि उसके दासी शुक सारिका ब-
हुत हैं लेकिन मैं जहांतक बनेगा तेरी मुलाकात करा दूंगी ऐ
से कह दूती फिर मोहनी के पास आई देखे तो नख सिख से
सिंगार कर बैठी हुई पान खाये सोभा की राशि बन गई है॥
और कहरही है कब मोहनी आवे और कब मैं मिल जाऊं
मोहनी को देखतेही खुशी हुई कि जो चाहती थी सो बात
हुई इतनेमें देख कर प्रभावती बोली हे मालन आई मैंने
री बाट देख रही थी मालन बोली मैं तो तेरी दासी हूं तेरा हु-
क्म बजाया ले चल अब देर मत कर इतना सुन पर शुरुप
से विलास करने चली और दूती का हाथ पकड़ लिया और चौ-
क में आई और चाहे कि जावे तब सारिका बोली कि प्रभावती
तू वहां जाती है यह दूती है इसका नाक कान काढना चाहिये
और पर पुरुष के पास जाना न चाहिये मदन सेन को का तुझे क
ह गया था और हम से क्या कह रक्खा है सो तू भूल गई और मैं न

दंन मैंन के आनेपर समझूंगी तुझे उसे कुड़वा दूंगी शादी अपनी और करलेगा उस वक्त तुझे बहुत रंज होवेगा इससे मेरीनसीहत मान तू बड़े घर की बेटी है इतना सुन प्रभावती बोली अरे राड़ कम समझ तू मुझे क्या सिखलावे है देख शुक। तो नहीं बोला तू मरा चाहती है तब मैना बोली मे तेरी बेहतरी को कहती हूं और सच कहती हूं में तुझे जाने न दूंगी तब तो प्रभावती को गुस्सा आया पिंजरे में ॥ हाथ डाल मैना को पकड़ मार डाला तब चली तो कुत्ता ने काम फड़ फड़ाया उसे भी लात मारी उस में बिलाई आपड़ी फिर उसे भी लात मारी प्रभावती ने क्रोध किया सगुन अच्छा नहीं हुआ उस वक्त शुक को चिंता भई कि अगर में बोलूं तो जैसी मैना की गति हुई वैसीही मेरी होगी और जो नहीं बोलता तो प्रभावती निहायत काम के वस हुई मद करके अंधी हो रही है इसे आगा पीछा दिखलाई नहीं देता श्लोक नैव पश्यति जन्मांधो कामांधो नैवपश्यति नैव पश्यति मदोन्मत्ता अर्थी दोषान न पश्यति १ इससे प्रभावती कामांध हुई किस तरह समझे ऐसे मन में चिंता करने लगा और जो न कहूं तो वचन मेरा जाता है तिससे ऐसा करूं कि न जाय और मेरी बातभीरहे और मुझे मार भी न डाले और इसी को भी खुश करूं तो गंधर्व श्लोकउत्पन्ने शुका पे बुद्धि रेवगरी यसी बुद्धि होना विनश्यंति यथाते सिद्ध। कारकाः १ उत्पन्ने षु च कार्ये षु बुद्धि रेवगरी पसी वने सिद्धो मदोन्मत्त अर्थ को न विनाशितः २ इस तरह मन में विचार करने लगा उस वक्त शुक बोला जिस काम को जाती हो सो। सिद्ध होई आप पधारिये यह शुक संबंधी वचन सुन प्रसन्न हो प्रभावती बोली हे शुक में पर पुरुष का आनंद भोग देखना चाहती हूं इससे जाती हूं शुक ने कहा युक्त है याने बेहतर है पर तु यह काम कठिन है निंदित है कुलकी स्त्रिन को जोग नहीं

विभचार नीको जोग है तुमें न चाहिये तब प्रभावती बोली क्या न जाऊं तब शुक कही मैं कैसे करूं आप की इच्छा हो सो करो मगर एक काम करो नारी वे जारी जानती हो तो जाओ और नहीं जानती हो तो मत जाओ और जाओगी तो बहुत दुख पाओगी तब प्रभावती ने कहा जारी क्या और बेजारी क्या सो कहो तब शुक बोला जो कोई पर पुरुष सो रति करै और कोई जान पहुंचे तो उस को जवाब कैसे देवै जिसमें अपना ऐब बढ़के और लज्जा बचै नहीं तो बड़ा दुख होता है तू भले कुल की बेटी भले कुल में ब्याही एजी सो काम करेगी तो दोनों कुल की लज्जा रहेगी और तू दुख न पावैगी जब ऐसा शुक ने कहा तब तो मन में विचार और शुक से कहा हे शुक क्या करूं तब शुक बोला कि उस वक्त बुध उपजै तो जाय जैसे हरदत्त ब्राह्मण की स्त्री लक्ष्मी उस का नाम उस वक्त उस को जो बुद्धि उपजी और अपनी लज्जा राखी जो ऐसी बुद्धि उपजै तो जाना पराये पुरुष पर है नहीं तो प्रीति पराये पुरुष सें न करै तब प्रभावती शुक से पूछने लगी कि लक्ष्मी कौन प्रकार से बुद्धि किया सो कहो तब शुक बोला जो आप जाय और अपना काम करें फिर पीछे चिंता को थिर करे तब मैं तुम से ॥१५॥ वह गति कहों प्रभावती ने कहा कि मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ है तब शुक कहने लगा कि दूती को बड़ा आश्चर्य हुआ है दूती को विदा करदेउ तब प्रभावती ने दूती को अपने हाथ की अंगूठी देकर विदा किया और यह कहा कि कल आवना चलूंगी ऐसा कह विदा किया और यह कहा कि आज मैं बात सुनूंगी तब दूती नायक के पास गई अंगूठी दिखाई और कहा कि कल को आवना कहा है तब प्रभावती बोली शुक कहो तब शुक बोला कि जारी तो यह है जो पर पुरुष सो रति करै और बेजारी उस का नाम है जो करके

पकतावै अपनी लज्जा राखे कोई जाने नहीं तब काम सही
इस बात के सुनने की इच्छा हो तौ सिंगार उतारो चौकी
पर बैठौ एकान्त मन करो तब मैं कहूं प्रभावती सिंगार
उतार चौकी पर बैठी तब शुक ने प्रथम कथा का आरंभ कि-
या सो कहते हैं

अथ प्रथम कथा का प्रारंभ

एक चंद्रावती नाम नगरी है तहां भीम सेन नाम राजा रा-
जकरता था वहां मोहन नामी सेठ रहता है तिस्का बेटा सु-
धन्वा बहुत प्रवीन गुनवंत है उस देश में हरदत्त नाम का-
यथ तिस्की स्त्री लक्ष्मी नाम है और जैसा नाम है वैसाही रू-
प और महा प्रवीन है तिस्के पौछे एक दिन सुधन्वा ने ल-
क्ष्मी को देखा मनमें लालसा आई और यह विचार किया कि
इससे रति कीजिये और ऐसा विचार के दूती के पास गया।
और उससे पूछा कि तेरा क्या नाम है तब दूती बोली मेरा।
नाम सोप वास है सुनना सोप वास मेरा एक काम है लक्ष्मी
के लेह में मेरा चित्त फसा है सो उसे मिलाय दो तब दूती
ने कहा मैं उसको संकेत आस्थल के बीच ल्याऊंगी तू चिं-
ता मत कर तेरा काम पूरा होगा ऐसा कह दूती लक्ष्मी के
घर गई और घर में हरदत्त न था जाका बैठी वहां सोपवास ने
लक्ष्मी को बहुत उपदेश किया और रूपयों का लालच
दिया तब तो मनमें चलायमान होत भई कि पर पुरुष से
रति करनी ऐसा मन में ठानि के प्रणाम के वक्त
संकेत को लेगई और जा बैठी सुधन्वा न आ-
या और सुधन्वा को राजा ने बुलाया सो वह राज पर गया।
और वहां आधिक का वक्त बीत गया दूती से बोली क्यों नहीं।
आया तब दूती बोली कि राजा के हजूर की आज्ञा में कोई
काम में लग गया इससे नहीं आया फिर लक्ष्मी बोली और

एक काम कर जो कोई अच्छा सा हो उसे लेआ मेरा मन॥ अत्यंत है यह सुन दूती मलीन मन गांव में फिरी कोई मन में आवै नहीं तब हरदत्त लक्ष्मी का भर्तार मिला उसको ले आई और जानती नथी तिससे ले आई जब भर्तार आ खड़ा हुआ तब लक्ष्मी देखे तो अपना भर्तार आ खड़ा है तब बहुत सोच किया यह कह शुक ने प्रभावती से पूछा उस का भर्तार से उसने क्या कहा और कैसें मुकरी सो कहो तू कह अथवा तेरी दासी कहै या और कोई सखी होय सो दक्षा जवाब देउ तब प्रभावती बोली हम नहीं जानती तुम कहो तब शुक ने कहा जो तू आज जाने का काम न करै तो मैं कहूं तब प्रभावती बोली तो न जाऊंगी तो अब याको उत्तर सुनो जो दूती पर पुरुष जान लाई तो और तिससे उसका भर्तार रहा तब मन में एक बात उपजाई देख तेही छाती माथा पटकने लगी बहुत आपघात किया तब पति ने देखा अपनी स्त्री है आपघात करती है तब बोली अो लक्ष्मी यह क्या करती है तब लक्ष्मी बोली तू कितना मेरे आगें झूठ बोला कि मैं पर स्त्री के बुलवाने पर बुरा काम नहीं करता यह जान तेरी परीक्षा के वास्ते दूती पठाई और तू पर स्त्री जान आया है सो मैंने जाना कि तू निर बुद्धि है इससे तेरा मुख देखने योग्य नहीं यह सुन लक्ष्मी के पायन पड़ी और अपने घर ले आया शुक बोला साहूकी बहू ऐसा जबाब कर अपने को बचाया और तू ऐसा जो काम करै और फिर जो लक्ष्मी कैसी बुद्धि उपजै तो जाव नहीं तो मत जावो यह सुन साह की बहू उठी पलंग पर सोरही इति शुक बहत्तरी की प्रथम कथा १

अथ द्वितीय कथा प्रारम्भ ॥२॥

अब प्रभावती फिर दूसरे दिन प्रात के वक्त सोरह सिंगार

का फल खाय दूती का हाथ पकड़ कहा जब चली तब शुक से
बोली हे शुक मैं पर पुरुष के सुख को जाती हूं तब शुक बोला
अच्छी बात है परंतु जो देवी ने जोनसी बुद्धि करी सो कीजो।
तब प्रभावती ने कहा सो कहो तब शुक बोला अपना मनोर-
थ कर आओ तब कहूं सचताई से सुनो प्रभावती बोली सु-
न के जाऊंगी तब प्रभावती सब सिंगार कर चौकी पर बैठ बो-
ली शुक कहो तब शुक बोला एक नंदन नाम नगर है तहां
चन्द्रांशु राजा था तिसका बेटा राज सेखर है तिस की वह
शशि प्रभा थी सो वह एक दिन सेठ का बेटा वीर सेन तिस
को देखा दोनो की काम की रीत लगी और दुश्क के मैदान
में पूरे होगए खाना पीना छोड़ा और दिल में विचार करने ल-
गे कि अब क्या करें तब उसकी दाई से जाकर मुलाकात
की यशो देवी उस का नाम था उस से कहा कि राज कुमार
को वह से मेरा मन लगा है उस से मिलादे तब शुक बोला हे प्र-
भावती किस तरह मिली सो कहो तब प्रभावती बोली कि तु-
ही कहो मैं नहीं जानती तब शुक कहने लगा कि तू न जाय
तो कहूं तब कही कि न जाऊंगी तब शुक कहने लगा कि
दाई यशो देवी को अपने बस किया तब शशि प्रभा
सिंगार कर अपने महल में बैठी थी उस समय यशो देवी श-
शि प्रभा के महल में गई एम एम किया और बोली कि शशि
प्रभा तेरी सुंदर दाई को देख का मेरे मन में बहुत दुख हो
ता है तिस से मैं एक बात कहूं जो तेरे मन आवे तब शशि
प्रभा बोली जो तू कहेगी सो करूंगी तब दाई बोली कि
तेरा जीना धिक्कार है जो पराये पुरुष का सुख नहीं जानती॥
तब इस सुख को जानोगी तब बहुत प्रसन्न होगी तब रा-
जा की स्त्री बोली जो तू बतावे सो कहूं तब दाई बोली जो
तू मेरा कहा माने तो तो बहुत अच्छा होगा तब शशि प्र-

मा बोली वह कह क्या है तब दाई ने कहा वचन देउ तो मैं कहूं तब शशि प्रभा ने वचन दिया तब दाई खुश हो बोली कि एक वीरसेन पुरुष तेरी इच्छा करता है तिससे उसका मनोरथ पूरा कर कहा तेरे घर आऊं तब दाई एक उपाय बताया कि मैं अपने घर जाती हूं तू जब सवार होय तब मूर्छा खाय गिर पड़ियो काहू को औषध से नीकी मत होय पाछे मैं तेरे घर आऊं और जाकर वीरसेन से खबर करूं कि तेरा मनोर्थ सिद्धि होगा तेरे घर आकर तुझै ले चलूंगी और मनोर्थ सिद्धि करूंगी यह कहकर दाई बोली तू अब चिंता मति करे सबेरे काम होगा तिसके पीछे शशि प्रभा प्रात ही अकस्मात मूर्छित हो गिरी सब को बड़ा सोच हुआ कि अचानक क्या हुआ सबने झाड़ फूंक कर बाया और दवाई भी दीं मगर अच्छी न हुई तब तो गांव में ढंढोरा फेरा जो कोई शशि प्रभा को अच्छा करे तिसको बहुत कुछ मिलेगा जब ऐसा कहा तब दाई बोली कि मैं नीकी करूं जो मेरा कहना करे तो अच्छी होय यह बात सुन राजा से कहा कि यशो देवी ऐसा कहती है जो मेरा कहना करो तो मैं नीकी करती हूं यह बात सुनतेही बुलाई और फरमाया कि जो तू कहै सो करें यशो देवी बोली कि जो हुक्म पाऊं तो कहूं राजा बोला जो तू कहै सो मुझै कबूल है तब दाई बोली कि जो तुम नीकी करवाया चाहते हो तो मेरे घर दिन आठ ताईं रहने की मर्जी करो तो नीकी होय तब॥ राजा ने कहा अपने घर इसे ले जा राजा की आज्ञा पाय अपने घर ले आई वीरसेन वणिक मन प्रसन्न किया आठ दिन तक भोग विलास किया बाद आठदिन के शशि प्रभा अपने महल में आई राजा देख कर बहुत खुश हुआ कुंवर भी बहुत आनंद हुआ और देवी को बहुत द्रव्य दिया और विदा किया इस तरह

शुक ने प्रभावती से कहा जो ऐसी बुद्धि हो तो जाइये यह सुन पलंग पर जा सोरही ॥

॥ अथ तीसरी कथा का प्रारम्भ करते हैं ॥

फिर तीसरे दिन प्रभावती वैसाही सिंगार कर चली पर पुरुष के मिलन को उस वक्त शुक सों पूछा हे शुक मैं पर पुरुष के रति को जाती हूं तब शुक बोला कि मिसेह पधारो याने जाव मनोर्थ सिद्ध करो परंतु जो राजा सुदर्शन कीसी बुद्धि उपजै तो जाव तब प्रभावती बोली कि राजा सुदर्शन कौन था औ कैसी बुद्धि थी कहो जहां सुदर्शन नाम राजा राज करता था तिस्के गाव में विमल नाम वनिक बसता है तिस्की स्त्री एक तो सुर सुंदरी दूसरी रुकमिन है महा सुंदरी को रूप देख कुटिलता महा धूर्त बहुत काम के आसक्त हुवा मन में विचार कि क्या करें और किस तरह से वैसे अंबिका के मंदिर में जाकर बहुत सेवा की तब देवी प्रसन्न हुई और बोली वर मांग मैं बहुत प्रसन्न हूं तब धूर्त बोला कि विमल वनिये कासा रूप दीजै तब देवीने कहा कि तथास्तु ऐसा ही होगा इतना कहते ही उसका रूप दूसरे विमल वनिये का सा होगया तब कुटिल धूर्त भी घर गया और दूत फाक विमल अपने घर था उस वक्त घर में बैठ दास दासिन को खुश किया घर में रहने लगे और कहा कि मेरा सा रूप बना विमल वनिया कोई आवे तिसको बैठने न देना ऐसा कह कर घर में रहने लगा स्त्रिन के साथ अपना मनोरथ सिद्ध किया पीछे विमल विचार आया कि यह धूर्त ने मोको बंचना कीनी अब क्या उपाय करें तब घर के पास आया और अपने मन में विचार करने लगा क्या करूं जो कामसिद्ध हो तब घर गया धूर्त ने उसे देखा तो गाली देने लगा कि मेरे घर तू क्यों आया है ऐसा कहा उन दोनों में बड़ी लड़ाई हुई इस में शहर के लोग बहुत जमा हुए दोनों की बातें सुन बड़ा आश्चर्य हुआ कि घर किसका है दोनों के रूप एक

समान हैं तब दोनों राजा के पास गए राजा ने न्याय किया तब शुक ने पूछा कि हे प्रभावती उस धूर्त को किस तरह निकाला सो बता सो प्रभावती ने कहा मैं नहीं जानती तू कह तब शुक बोला आज न जावो तो कहूं प्रभावती बोली आज न जाऊंगी तब शुक बोला कि राजा ने विमल की दोनों स्त्रियां बुलाईं जुदा २ बुलाके उन से पूछा कि कहो तुम्हारे बाप का क्या नाम है और माता को क्या नाम है और ब्याह हुआ और घर आई तब रात्रि समय विमल ने तुमें क्या दिया तब उन दोनों ने सब अहवाल कहा कागज में लिख लिया विमल से पूछा तो उसने भी वही कही सब बात मिली पीछे धूर्त से पूछी उस की बात एक भी न मिली तब उस धूर्त को गांव से निकाल दिया और विमल को उसकी दोनों स्त्रियों समेत उसके घर विदा किया वह अपने घर आया हे प्रभावती जो एक ऐसा गुन होतो जावो नहीं तो मत जावो ऐसी सुनी तब पलंग पर सोरही॥ इति शुक बहत्तरी की तीसरी कथा समाप्त॥

चौथी कथा का प्रारंभ

फिर चौथेदिन प्रभावती सिंगार करके पर पुरुष के रति के वास्ते चली उस वक्त शुक से पूछा हे शुक मैं पराये पुरुष का सुख चाहती हूं इससे जाती हूं शुक ने कहा बहुत अच्छी बात है लेकिन गोविंद ब्राह्मण ने जो बड़े की आज्ञा न मानी तो बहुत दुख पाया तब प्रभावती बोली गोविंद ने बड़ों का कहना क्यों नहीं किया और किस तरह बड़ा दुख पाया और बड़ा दुख भया सो कहो तब शुक बोला कि एक भद्रावती नाम नगरी है वहां का प्रताप सेन नाम राजा था और राज करता था उस गांव में सोम प्रभु नाम ब्राह्मण बस्ता था और पंडित बहुत प्रवीन था तिस्की सोभा नाम स्त्री थी तिस्की मोहनी नाम बेटी थी सो वह विष कन्या थी सो सब जानते तिस्को कोई ब्याहे नहीं पिता को इससे बड़ा सोग हुआ कि क्या करे आखिर को देशांतर को गया और एक गांव में जाकर गोविंद नाम ब्राह्मण से मुलाकात

हुई उसे कहा कि मेरे एक मोहनी वेटी है वह तुझे देता हूं तू व्याह कर लेवह वहुत सुंदरी ऐसी कोई नहीं लेकिन विष रूप है इतना सुन कर कवूल किया परंतु भाई वंधु वहुतों ने मने किया कि जो तू विवाह करेगा तो वहुत दुख पावेगा पर उसने किसी की वात न मानी एक तो स्त्री का लालच दूसरे धन का लालच इ आव्याह किया और इ-व्याहलिया अपने घर आया तो मूर्ख कन्या थी सो अपने स्वामी को दे-ख वहुत दुख करती एक दिन स्वामी से कहा कि मुझे मेरे वाप के घर पहुंचादो तव ऐसा कहा तो गोविंद उसे ले चला तव राह में आया तो स्त्री से कहा तू यहां वैठ मैं काम कर आऊं आप तो काम करने को गया उस वक्त एक विष्णु नाम ब्राह्मण आया और स्त्री को देखा तो महा सुंदरी है मन में काम पीड़ित हुआ और मोहनी भी काम के वस हुई मन में विचार किया कि इससे भोग की जिये क्योंकि वहुत चतुर है उस वक्त मोहनी ने वहुत मन से कहा पान लो गे इलाइची दिया गोविंद ने भी आदर किया महल ने उतर गोविंद वोला कि यार तू जरा महल के पास वैठ मैं काम कर आऊं इतना कह कर गोविंद तो गया उस वक्त विष्णु उसे महल को ले भागा पीछे से गोविंद ने पुकारा कि हे विष्णु दास खड़ा हो या मेरा जवाव न दिया तव तो दौड़ के आ पुकारा आपस में वहुत लड़ाई हुई इसी तरह लड़ाई होते होते राजा के घर गए और पुकार किया मेरी स्त्री लिये जाता है तव राजा के प्रधान ने न्याय किया था तव प्रभावती से शुक वोला हे प्रभावती कहो उस ने क्या न्याय किया तव प्रभावती वोली जो नहीं कही कह तव शुक वोला जो तू जान न जाय तो कहूं तव उसने कहा कि न जानूंगी तव शुक वोला हे प्रभावती वुद्धि सेन ने उस क-न्या विष को वुलाइ के पूछा कि जिस दिन तेरा पति गोविंद से संग भया था उस दिन क्या भया था और क्या दिया था सो सव ही को कत कही तव उस कन्या ने सव वात कही सो सुन कर सव कागज में लिखा पीछे गोविंद से पूछा उसने भी वही वात कही इन दोनों की वात ठीक मिली तव उस को धक्के देकर निकाल दिया तव प्रधान के ने कहा स्त्री गोविंद

की है और प्रधान गोविंद से कहने लगा कि इस स्त्री को रक्खेगा तो मरण होगा इससे तू इस स्त्री को छोड़ दे कि शास्त्र भी ऐसा कहता है। श्लोक वैद्यं पानरतं नटं कुपटितं मूर्खं परिव्राजकं दुष्टं कुष्ठयुतं खलं गतयशं स्वाध्याहीनं द्विजं। राज्यं बालखलं मंत्रिरहितं मद्यं कुलाचारिभार्यां यौवनगर्वितां परगतां मुंचेत्तु शीघ्रं बुधः इस तरह गोविंद ब्राह्मण को समझाया परंतु विष कन्या को उसने त्याग न किया वहां से उठ के बागों को चला यहां एक मनुष्य नजर आया उसे विष कन्या ने कहा कि जो तू इसे मार डाले तो तेरे संग चलूं जब इस तरह कहा तो उसने इस ब्राह्मण को मार डाला तिससे कहता हूं जो कोई कहता अच्छी बात है और न माने तो गोविंद का सा हाल होता है इस बात को सुनजा सोरही॥ **पांचवीं कथा का प्रारंभः॥** फिर पांचवें दिन प्रभावती सिंगार करके चली उस वक्त शुक से पूछा हे शुक मैं पर पुरुष के स्वाद को जाती हूं तब शुक बोला कि अच्छी बात है पर बाल पंडिता की सी बुद्धि होती जाना उचित है तब प्रभावती बोली कि बाल पंडिता की कैसी बुद्धि थी और क्या बात उसने करी तब शुक बोला अगर आज न जावो तो कहूं तब प्रभावती बोली न जाऊंगी तब तोता कहने लगा कि उज्जैन नगरी में राजा विक्रमा जीत राज करते थे कलावती रानी से बड़ा प्यार करते क्योंकि वह बहुत सुंदरी थी सो राजा के मन में एक दिन यह आई कि हम तुम थार में भोजन करें यह विचार करके रानी को बुलाया पास बैठाया और दोऊ थार में भोजन करने को बैठे जीमने में रानी ने पूछा कि क्या है राजा ने कहा कि यह मच्छ की तरकारी है यह सुन रानी बहुत गुस्सा हुई कि राजा मैं पतिव्रता हूं पर पुरुष को स्पर्श करती नहीं यह आप क्या करते हैं इससे राजा बहुत खुश हुवा उस वक्त परमेश्वर की मर्जी से मच्छ हंसा तब राजा को बहुत आश्चर्य हुवा और कहा कि मृतक मच्छ है क्या कारण कि हंसा इतनी बात विचार आधा जीम उठ खड़ा हुआ और दरबार में आकर यह अचरज सब से पूछा कि मृतक मच्छ

कयों हंसा यानी हंसा सो कहो तब सारी सभा बोली कि महाराज यह माया देखवा की है हम लोग तो यह बात जानते नहीं जिसे आगम की मर्म हो सो जाने जब ऐसा सबोंने कहा तब राजा सब विद्या विसारदों को बुलाया जब ब्राह्मण आया तब यह पूछा कि मच्छ हंसा सो कहो तुम्हारा नाम सब विद्या विसारद है सो अपना नाम सार्थक करेय इसुन ब्राह्मण बोला कि महाराज यह अजान बात है देवताओं को दुर्लभ तिसे मनुष्य कैसे देख के कहेंगे आज के पांचवें दिन इसका उत्तर देवों तब राजा ने कहा जो पांचवें दिन न कहोगे तो वेदुअन करूंगा गांव से निकाल दूंगा तब ब्राह्मण बोला कि जो आज्ञा करोगे सो करेंगे ऐसा कह कर घर आया और निहायत सोच मात होकर शास्त्र में देखा लेकिन इसका उत्तर न पाया तब तो मन में इना शोच किया कि सब गनिश गई और देश भी कूटा और देश से न जावेंगा तो प्राण जायगा ऐसा विचार अन्न जल को त्याग किया तब वेटी बाल पण्डित पिता को दुखित देख कर ॥ बोली हे पिता इतना सोच तुम काहे को करते हो मुझे आगे सब वृतांत कहो तब ब्राह्मण ने सब बात कह सुनाई और कहा कि मुझको वह उत्तर नहीं आवता तू कहे सो करू तब बेटी बोली कि पिता शास्त्र की बात जो है सो मैंने जानी नहीं और विद्या चरित्र में से विचार न किया तब ब्राह्मण बोला कि राजा मुझे बुलाकर पूछा कि मत्तक मच्छ क्यों हंसा सो मुझसे कहो उसका उत्तर कोई न आया सो चिंता करता हूं यह बात सुन बेटी बोली कि पिता यह बात तो कुछ नहीं इस बात में चिंता मानि करो राजा के पास जाकर यह कहो कि इसका उत्तर मेरी बेटी देगी यह सुन के ब्राह्मन बहुत खुश हुवा और राजा के पास गया सब वृतांत कहा उस वक्त राजा ने बाल पंडिता को बुलाया और कहा कि मच्छ कयों हंसा सो कहो तब बाल पंडिता हाथ जोड़ कर राजा से बोली हे महाराज आप राजा हैं फिसे देखने बिसे कहा नहीं जाता उस वक्त एक श्लोक कहा काके शौचे द्यूतकारे सत्यं स्त्री वैधर्य मद्यपेतत्त्वचिंता सर्पे क्षांतिस्त्रीकामी पिशुने राजा मित्रं केन दृष्टं श्रुतं वा ? उस वक्त सब पंडितों ने यह कहा त्यजे दैकं कु-

लस्यार्थे ग्राम स्यार्थे कुलं त्यजेत ॥ ग्रामं जन पदस्यार्थे ग्रा त्मार्थे पृथ्वीं त्यजेत तब पिता मन मे विचार किया कि इसका उत्तर न आवे भाए जो उदसे देशांतर जाए बेटी के कान में कहा तब बेटी बोली श्लोक ॥ विद्या वतानहा नंपिल्ल नांच विशेषतः सुरानां सेवकानांचना श्रयः पार्थिवं विना १ इस नरह पिता को समझा कर राजा से बोली हे महाराज तुम ब्राह्मण के ग्रंथ हो लेकिन स्त्री के चीव कहा जानो पूछने योग्य नहीं परंतु भारत कहा है श्लोक एक को हर पानेह एकादश व भूपति पंचा नाम थियो भर्ती वसा नकस्ति मानुषी बोले हे बाल पंडित तूने कहा सो मैंने जाना परंतु इसका उत्तर प्रसिद्ध किया चाहिये मन मे संदेह मत कर मैं सब बात माफिक करूंगा तब उस समय वाल पंडित सभा में सब बात विचार का यह श्लोक कहा और कहा कि मच्छ योंहंसा सो सुनो श्लोक यत्नो स्पृशति नो मत्स्यान् मृता नपि महा सती पुरुष व सतो रंजन हंस नाम धरो ध्रुवं परि भा वयसा रंजन श्लोको यौवं सदा दही मूढ़ आराय योदेपाय दिए कृति मापुन। इस नरह से बाल पंडित ने दो श्लोक पढ़ और अपने घर गए बाद इसके सभा के लोग उन श्लोकों के अर्थ विचार किया तो राजा कामातुर है सो तो बात झूठी है इसे बाल पंडित से फिर पूछो यह विचार कर चुप होरहे कि कालि पूछेंगे इस नरह प्रभावती से कहा बाल पंडित दूसरे से कही थी सो फिर कहो यह सुन सोरही। छठी कथा का प्रारंभ है ॥ फिर छठे दिन सिंगार कर पुरुष के पास चली उस वक्त शुक बोला हे प्रभावती बाल पंडित ने राजा को कैसा समझाया सो कहो तब प्रभावती बोली मैं तो नहीं जानती तुम कहो तब शुक बोला हे प्रभावती तू चित देकर सुन जब दूसरा दिन हुआ तब राजा ने बाल पंडित को बुलाकर पूछा हे बाल पंडित उस का अर्थ कहो क्या है तब बाल पंडित बोली कि राजा उस का अर्थ मत पूछो जो पूछो तो सुबंत नामा वनिक की स्त्री पद्मिनी के सत्यानाश होगा तिससे पूछो मत तब राजा ने कहा पद्मिनी के पश्चात तुम किस तरह हुआ सो कहो तब बाल

पंडिता बोली हे महाराजा चंद्रावती नाम नगरी थी तिस नगरी के राजा चंद्रप्रभ तिस के गाव में सुमति नाम तांनयां वसता था तिस के एक स्त्री पद्मिनी है सो वह सेठ धन हीन हुआ और बुद्धि हीन हुआ और लकड़ी बेचने लगा बहुत दिन गुजरे कि एक दिन पानी बहुत बरसा लकड़ी न मांई सबेरे वन से फिरे फिरते २ एक मंदिर मिला देखा तो वहां श्री गणेश जी का मंदिर है और तेल सिंदूर खूब लगा है मन में विचार किया कि विघ्नेश्वर : किंनकरोति पापं ऐसा विचार करके बोला कि मूरत यह फाड़के आज बेचके कुछ लीजिये ऐसा मन में सोच कुल्हाड़ा ऊंचा किया और चाहा कि लगावें इतने में श्री गणेश जी निहायत प्रसन्न हुवे और यह कहा कि सुमंत तू जो वर मांगेगा सो दूंगा वर लेजाया कर लेकिन किसी से यह बात कहना मत जो कहेगा तो उसी दिन से फिर न मिलेगा यह कह कर पांच रोटी दी सुमंत घर ले आया और भक्षण किया ऐसे ही हमेशा ले आवे और भोजन करे एक दिन सुमंत स्त्री पद्मिनी ने अपनी पड़ोसन मंदोदरी को एक रोटी दिया लेकर वह बहुत खुश हुई और एक दिन पूछने लगी कि ऐ सखी यह रोटी कहां से आती है तब पद्मिनी बोली मैं नहीं जानती हूं मेरा घर का धनी हमेशा ले आता है मंदोदरी ने कहा तेरा धनी कैसा प्यार करता है जो तुझे यह बात न बताई जान पड़ता है कि तू उसको प्यारी नहीं है तब बोली कि आज पूछूंगी मंदोदरी ने कहा कि तू संयोग समय हठ करके पूछना ऐसी बातें कर घर में आई रात के समय पति से इस तरह से बोली कि आज एक बात पूछती हूं जो तुम न कहोगे तो मेरे तुम्हारे लड़ाई होगी तब पति बोला तू पूछेगी सो कहूंगा तब बोली कि यह रोटी रोज कहां से लाते हो तब बोला प्यारी यह बात मत पूछ और जो पूछेगी तो बहुत पछतावेगी यह सुन कर बहुत गुस्सा हुई और कहा कि कहो तो मुश्किल न कहो तो तो मुश्किल चाहिये भवितव्यं भवत्येव होन हार आमिट है आखिर को पति बोला कि एक दिन लकड़ी को गया लकड़ी हाथ न आई तब फिरते २ एक गणेश जी के मंदिर में गया देखा तो मूरत है और सिंदू-

रलगा है तब विचार किया कि सूत काढ़ के बेचूं यह बात सोच कुल्हाड़ा उठाया था कि गणेश जी प्रसन्न हुए और बोले कि जो वर मांगे सो देऊंगा तब मैंने कहा कि जीविका दान दीजिये तब बोले कि पांच रोटी हमेशा लिया कर परंतु किसी से मत कहना और जिस दिन कहेगा उस दिन से न देंगा तब मैंने कहा कि काहे को कहूंगा मुझे तो मतलब से काम है उसी दिन से मुझे रोटी देते हैं यह सुन दूसरे दिन सब वृत्तांत मंदोदरी से कहा तब मंदोदरी ने अपने भर्तार से सब हाल कहा और यह कहा कि तुम जाउ भर्तार कुल्हाड़ा लेकर गणेश जी के पास गया और कुल्हाड़ा उठाकर मारने लगा तब गणेश जी बोले जो तू कहेगा सो करूंगा इतने में वह बनिया आया और उसके देखते ही गणेश जी ने हाथ उसका बांध कर खूब लकड़ी से मारा इसे उसकी स्त्री ने देखा कि बेर हुई पति नहीं आया चल के देखूं जाकर देखा तो बंधा है तब पूछा कि किसने बांधा है तब पति बोला मेरे वचन ने बंधवाया है जो मैंने तेरे आगे कहा तब पद्मिनी ने गणेश जी की बहुत स्तुति करके प्रसन्न किया तब गणेश जी बोले कि तेरे भर्तार को रोटी मिलती थी सो तूने मंदोदरी को दिया अब तेरा भर्तार मुझसे रोटी लेकर मंदोदरी को देवे तो छोड़ूं पद्मिनी ने कहा जो कहोगे सो करूंगी इससे सुमंत को छोड़ा फिर पद्मिनी बहुत पछताई स्त्री पुरुष और मंदोदरी का भर्तार अपने घर आया तब बाल पंडिता बोली राजा अर्थ पूछोगे तो ऐसे ही पछताओगे इस तरह प्रभावती ने शुक से पूछा कि तूभी पछतावेगी यह सुन प्रभावती फिर जाकर सोई ॥ इति कहीं कथा सम्पूर्णम् ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ श्री श्री श्री श्री

अथ सप्तम कथा का प्रारंभः

सातवें दिन प्रभावती सिंगार कर पराये पुरुष से रति करने चली शुक ने कहा जाती हो तो बाल पंडिता ने राजा को क्या उत्तर दिया वैसा जवाब आवे तो जाउ नहीं तो मत जाव तब प्रभावती बोली बाल पंडिता ने राजा को क्या उत्तर दिया तब शुक बोला वैठो तो

कहूं तब प्रभावती बैठ गई तब शुक कहने लगा राजा ने बाल पंडिता से पूछा कि मच्छ को हंसा पंडिता बोली कि राजा स्वर्ग की वेश्या को पश्चाताप हुवा तैसाही होगा राजा ने कहा वह बात कहो बोली राजा एक मच्छ नाम नगर है तहां वीरसेन नाम राजा राज करता था वहां सब ब्राह्मण बसते थे उन्ने विचारा कि पिता का उपजाया धन कहां तक खायगें इससे आपभी कमादये तो बेहतर है ऐसा विचार करके परदेश को चला तहां जाकर एक वन खंड देखा और वहां जोगेश्वर बहुत हैं तिन के आगे हाथ जोड़कर प्रणाम किया और खड़ा हुआ उस तपस्वी की ताड़ी लगी थी दोपहर के बाद जो ताड़ी खुली देखा तो एक ब्राह्मण खड़ा है जोगेश्वर बोले को बल्लभ यें से हो तब ब्राह्मण बोला हे तपस्वी मैं द्रव्य चाहूं नहीं मैं तो अतिथ हों आपके दर्शन की अभिलाषा थी तिससे आया हूं तब तो ब्राह्मण को देख बहुत खुश हुए और योग बढ़ा दिया और यह कहा कि पांच सौ मोहर देंगा किसी से कहना मति और जो किसी को बतावेगा तो बात जाती रहेगी और मेरा भी पास आय रहेगा ऐसा कह योग बढ़ा दिया ब्राह्मण प्रणाम कर आगे चला राजा पुरी में गया जहां स्वर्गकानाम वेश्या रहती है उस वेश्या से आसनाई की और उसके घर रहने लगा उसे भोग किया करे और जो द्रव्य पावे उसे देदिया करे सिद्ध की आज्ञा सों द्रव्य का टोटा न था एक दिन वेश्या ने विचार किया कि यह द्रव्य कहां से लाता है तब विप्र से पूछा कि तुम द्रव्य कहां से लाते हो तब उसने सब गति कही सुन के विचारा कि जोग बड़ा कि स तारू से लीजे इस तौर विचार अपने मन में बात करी जब यह ब्राह्मण सूत गया तब कमर खोल लेलिया और प्रभात के होतेही वह देखे तो जोग बढ़ा नहीं तब तो बहुत सोच किया पीछे शहर में पुकारा कि वेश्या ने मुझे लूट लिया इस तरह कहता २ राजा के द्वार पर गया और पुकारा तब राजा ने वेश्या को बुलाया तब वेश्या की माता बोली कि श्री महाराज ब्राह्मण झूठा है इस के द्रव्य कहां से आई

मेरी वेटीके ऊपर आशक्त हुआ है झूठा तूफान लगाता है योग व-
ड़ा इसके पासन था यह वात निहायत बुरी है ऐसा कह ब्राह्मण।
को झूटा किया औ लोगो बड़ा उसी मुनीश्वर के पास गया वेश्या
के पास भी न रहा इससे महाराज आप समझो जो मैं सांच कहूं -
गी तो वेश्वर ब्राह्मण के ऐसी वेश्या की सी गति होगी जोग बड़ा
भी गया और प्रीति भी न रही इससे यह वात जाने देव इसे प्रभा-
वती से शुक ने कहा जो स्वर्ग के शुक को कथा कही राजा से।
विदा मांगी अपने घर को गई प्रभावती सुन के सोरही ॥७॥

अथ आठवीं कथा का प्रारंभ

आठवें दिन प्रभावती सोलह सिंगार कर के पुरुष के साथ रति
करने को चली उस वक्त शुक से कहा जाती हूं तब शु-
क ने कहा श्रेष्ट वात है परंतु वाल पंडिता ने फिर जो राजा को उत्तर दि-
या सो कहो प्रभावती बोली तुम्हीं कहो मैं नहीं जानती तब बोला कि
राजा ने वाल पंडिता को बुलाया और कहा कि अर्थ वता ओ तब पं-
डिता ने राजा को बहुत समझाया परंतु न समझा तब वाल पंडिता ने
एक वात और कही कि एक विक्रम नाम वनिया उसकी सुंदरी ना-
मस्त्री थी सो बहुत व्यभिचारिनी थी जैसे वह स्त्री भ्रांत भ्रष्ट भई
उसी तरह होगे जो इसका अर्थ सुनो गे तो राजा ने कहा उसकी
कथा कहो तब वाल पंडिता एक वात और कही एक त्रिपुर नाम
नगर था तहां का चिरविक्रम नाम राजा था उस गांव में सुंदर नाम
वनिया है उस के भुमक नाम स्त्री थी सो व्यभिचारिनी थी पण
ये पुरुष विन रहे नहीं एक दिन भर्तार वाजार को जाता था उस व-
क्त उस का गुण जाना दूसरी को वांध घर मेंडाल के गया ज-
व वह गया उस वक्त घर सूना भया जिस घरी दूती आई स्त्री ने विचा-
र कि उस पुरुष से संकेत है तिसे मुझे छोड़ दे उसके पास जाऊंगी व
हां वह मेंवैठा होगा तब दूती उसे छोड़ दिया कि उस स्त्री ने दूती
से कहा कि मैं उस के पास जाती हूं तू पीछे से घर में आग लगा कर आ-

इयो यह कह आप तो गई और दूती ने घर में आग लगा दिया और चली गई पीछे से भर्तार आया जो देखे तो जरता है तब पूछा कि। किसने आग लगाई है तब परोसिन ने कहा तेरी स्त्री आग लगा गई है इतनी बात सुनकर स्त्री को त्याग दिया और वह सुभगा देवी के मंदर में गई थी सो बाहू ने तिरस्कार किया इतो भ्रष्ट ततो भ्रष्ट हुई और वह तपकता हुई इसी तरह हे राजा अर्थ पूछ कर पछताओगे इतनी बात वह अपने घर गई प्रभावती कथा सुन सोरही ॥इति॥ ८॥

अथ नवीं कथा का प्रारंभ

फिर प्रभावती नवें दिन सिंगार करके पर पुरुष के पास रति को चली उस वक्त शुक सों बोली हे शुक मैं जाती हूं तब शुक बोला अच्छी बात है परंतु बाल पंडिता ने राजा को जवाब दिया सो सुनकर जाइयो प्रभावती बोली अच्छी बात है कहो तब शुक ने कहा कि राजा ने बाल पंडिता से कहा कि वह बार्ता कह तब बाल पंडिता ने बहुत समझाया परंतु राजा हठ किया और मन में समझावने न आया तब पंडिता बोली जो पुष्प हंस मुह तिसका पर वार बुलाओ वह जब हंसेगा तब उसके मुहं से फूल गिरेगा यह बात प्रसिद्ध है तुमको सत्य हंसे की बात समझावेगा तब राजा ने उसको बुलाया सब कुटुंब आन हाजिर हुए उस वक्त स्त्री पुरुष बहुत इकट्ठे हुए किस वास्ते मन में आश्चर्य है कि फूल कैसे गिरेगा सो देखें तिस समय महंतो न हंसे फूल झरें सब तमासा देखे तब राजा ने कहा हे बाल पंडिता पुष्प हंस वा क्यों नहीं तब बाल पंडिता ने कहा कि इसके मन में भय है। कि मैंने का अपराध किया है कि तिससे हंसता नहीं तब राजा को बहुत दिलासा दिया और यह कहा महंता बाल पंडिता की ओर देख के हंसो कि राजा अजहूं न समझे ऐसा कह कर हंसा उस वक्त फूलन का ढेर होगयो बाल पंडिता हूं हंसी तब राजा बोला कि तुम क्यों हंस्यो तब महंता ने राजा से कहा घर का छिद्र प्रगटन की- जिये श्लोक अर्थ नाप्तं मन स्तायं गृहे दुश्च रितानिच वंचनेचा-

पमानंच मनि मान्न प्रकाशयेत्१ महाराज इतने में न समझो तो प्रगट कर कहता हूं कि अपनी स्त्री मैंने पर पुरुष से रमन करते देखा तिससे शुक को बहुत हंसी आई तिससे कामलीला को देखके हंसी आई देखि राजा मैं हंस्या तिससे तेरी राणी को बहुत अचरज हुआ कि इसके आगे फूलों का ढेर हुआ है एनी को राजा देख फूल मारा फूल के लगते ही मूर्छा आई उस वक्त महता ने ब्राह्मणी के तरफ देखा कि यह मूर्छा नहीं आई इसको काम व्यापा है तिससे गिर पड़ी है तब महता बहुत हंस बोली कि एक विसाला नगरी नाम तहां का सुदर्शन नाम राजा है तिसके गांव में विमल नाम बनियां है सो इसको पहले भी कहे गांए हैं वही है इति दशमी कथा समाप्त॥ शुभंभवतु

अथ दसवीं कथा का प्रारंभ॥

दसवें दिन प्रभावती सिंगार करके पर पुरुष के पास रति को चली तब शुक सो बोली हे शुक मैं जाती हूं शुक बोला अच्छी बात है परंतु सिंगार देवी कैसी बुद्धि होती जा तब प्रभावती बोली सिंगार देवी ने कैसी बुद्धि उपजी सो कहो शुक बोला राजा पुर नाम एक नगर है तिसका रलेश्वर दैत्य नामी है शुक उसके गांव में बसता था तिसकी स्त्री सिंगार देवी महा व्यभिचारिणी थी एक दिन दैत्य नाग बुद्ध का वेदा लेवे को गया था उस वक्त सिंगार देवी ने एक यार को बुलाया तिससे कामक्रीड़ा करने लगी यह नग्न होकर उस समय पति को आते देखा। और विचार किया कि ऐसा करूं जिससे लज्जा रहे उस वक्त नग्न हो। कर पति के सामने नाचने लगी तब भर्तार ने कहा कि यह क्या भया जो नाच ती है तब सिंगार देवी बोली ऐ मूर्ख मेरे पैर में कांटा लगा है मैं भागा देखी हूं तू नहीं जानता तूने मुझे दुख दिया है मैं तेरी स्त्री को मार डालूंगी इतनी बात सुनते ही मूसल उठाय लिया और भाति उस वक्त अपने यार से भोग करने के मिस बावन किया आप कपड़े पहर के बैठ रही इतने में भर्तार आया और स्त्री से पूछा कि सिंगार देवी तू नग्न हो कर क्यों नाचती थी तब वह बोली कि हे भर्तार मुझे तो खबर नहीं

कि क्या बात हुई यह तो दैव माया हुई इसमें कुछ नहीं जानती दू-
सरा के सुन तेही भर्तार की चिंता मिटगई इसे सिंगार देवी कीसी
करे तो जा नहीं तो मत जाव इतनी सुन के फिर सोरही ॥ श्री

अथ एकादश कथा का प्रारंभ ११ ॥

फिर ग्यारस्वे दिन सिंगार कर पान खाय के चली उस वक्त शुक से
बोली हे शुक मैं जाती हूं तब शुक बोला कि तुम ब्राह्मणी की तरह
अद्भुत रस भाव सो जाव तब प्रभावती बोली कि सो कह क्या हुआ
तब शुक ने कहा कि एक भोडली पुर नाम नगर था तिसमें भीम नाम
राजा राज करता था तहां एक त्रिलोक नाम ब्राह्मण था तिसकी रमा
नाम स्त्री थी और व्यभिचारिणी थी पर पुरुष से प्रीति बहुत करती
भर्तार भय से कोई कुछ नहीं कह सक्ता था एक दिन पानी भरने
को गई तहां एक पथिक आवते देखा कि कैसा है रूपवंत गुणवंत
और जवान है उसे देख उसके मन में आई कि इससे रति कीजिये उ-
सके भी मन में आई कि रंभा से रति करों तब रंभा ने कहा पथिक मेरे
संग आओ लेकिन कुछ बोलियो मत मेरे चरित्र देख उसका भी म-
नरखो और तेरा भी रंभा ऐसे कह उसे घर ले आई उस वक्त घर
के पति ने पूछा यह कौन है तब उसने घड़ा धर बोली कि मेरी मौ-
सी का बेटा विद्या विलास है मुझ से मिलने को आया है तब ब्रा-
ह्मण बोला इनको बैठाओ अच्छी तरह से भोजन कराओ स्त्री ने वै-
सा ही किया इतने में रात हुई त्रिलोक ब्राह्मण घर का धनी ऊपर
जाकर सोरहा और विद्या विलास नीचे सूता जब पहर रात गई तब
रंभा विद्या विलास के पास आई और कहा कि अपना मनोरथ
पूरा करो तब ब्राह्मण बोला कि तूने कहा मेरा भाई है अब कैसे करें इ-
स में दोष लगता है जिससे नरक गामी होता है वही अपने मन में विचा-
र कर वस्त्र कर भोग करूं यह बात कबहीं न होगी भोग न किया पर वह
न मानी फिर रंभा ने कहा श्लोक यतोहि दुर्लभा रमा पितृ भ्रातृ परायणा
पितृ भ्रातृ मयी भूत्वा भोक्तव्या कामिनी नरै: १ हे मूर्ख कामिनी दुर्लभ

हे माता पिता भर्तार जिन की रक्षा करे सो आपने से आवे सो भोगन करे तो नरक गामी होता है श्लोक कामा तीं स्वय माया तां योन भुक्ते जिते विनी सो वश्यं नरकं यांती तत्र विश्वास तो नर १ काम पीडिता स्त्री आवे और पुरुष भोग न करे तो नरक में जाइ और ब्राह्मण तू बडा मूर्ख है आगे प्रद्युम्न ने माता की बेटी से भोग किया यह तो आगेसे चला आता है इसमे दोष नहीं है इतना कहा परभी उसके मन में न आई तब रमा को गुस्सा आया और यह कहा कि ऐसा तो मैं क्या करती हूं इतना कह कर चोंकमें आई और ची आवाज करके गई और यह कहा कि देवर ये पोसन मेरे भाई को त्रिदोषहुवा जो मारा जाता है तो मेरे माथे आपजस होगा इसे सब देखो इस के घरके कहेंगे कि इसने मारा होगा इतना सुनके ब्राह्मण दबक गया तब रंभा आसा लगाकर दिया जलाया आरोसे को इतनेमें पति आया और पडोसी सब आय बोले कि आरी आवू काहे को रोती है तब बोली मेरे भाई को त्रिदोष आगया है इससे मैं रोती हूं आगसे सेका तब अच्छा हुवा इसबात को सबोने सच जाना फिर सबसे कहा कि तुम लोग घर जाइ अब अच्छा होगया सोता है सब को विदा किया आपने नाम से इस तरह एक महेर रचा और अच्छी तरह भोग किया पीछे सबसे विदा होकर अपने घर आया पीछे जब भ आवे कोई पूछे नहीं इस तरह तुम्हें बुद्धि होती है प्रभावती जा नहीं तो मत जा॥

अथ द्वादश कथा का प्रारंभ १२

फिर बारहवें दिन प्रभावती सिंगार कर पर पुरुष के भोग करने को चली तब शुक से बोली हे शुक मैं जाती हूं तब शुक बोला अच्छी बात है पिछि कोपर भोगा कुम्हारी ने जैसा आपने भर्तार को जबाब दिया वैसी करतीत होती जाओ नहीं तो क्यों लाज रावाओ तब प्रभावती बोली उसने कैसे उत्तर दिया सो कहो तब शुक बोला कि एक नवल ग्राम है तहां नर पति नाम राजा है तहां महाधन नाम कुम्हार बसता है ताकी स्त्री का नाम भागा है अति व्यभिचारिणी है एक दिन उसका भर्तार घर नहीं था उस समय एक पुरुष को बुलाय वासो रति करने ल-

गो ताही समय भतीर आयो तब वहांना करी जो वाकी वावल पर चढ़ा
ह दिया नागी वट गो परंतु उसको नाये खुमिल परो और मागों मास
मे पति वोलो जो यह कहा कि यह कौन है ऐसे स्त्री से पूछा तब स्त्री हं
सी जो आज वड़ो अचरज भयो या जो मनुष्य है सो याकों राजा के।
लोग पकरबे को आए थे तब ये भाग्यो कछू वनी नहीं तब अपने घ
रमें आइ कियो इतने में तुम आए जो जान्यो एहै आए तब वावल च
ढ्यो हल वलाइके तामें कपड़े हूं न पहर सक्यो तासें मोको हंसी आई
तब कुम्हार वोला तू सांची है तब शुक वोला हे प्रभावती जो तुम पूछे
सो जल्द जवाव आवे तो जाव इतनी सुन के प्रभावती वोली नहीं
और जाकर सोरही ॥इति॥३१॥

अथ त्रयोदशी कथा का आरंभ

अव तेरहवें दिन प्रभावती काम क्रीड़ा को चली ता समय शुक सों कही
हे शुक मैं जाती हूं तव शुक वोला पधारो परंतु नितेक ब्राह्मणा की
सीवुद्धि उपजे तो जाव नहीं मत जाव तव प्रभावती वोली सो कहो
तव शुक वोला कि एक विद्यावंत नाम राजा है तो तहां के राव नाम
ब्राह्मण कर्मा हतो एक दिन तालाव पै गया तहां एक महा रूप
वंत बनेनी देखी उस से कहा तू मोसों रति कर तव उसने नहीं कि
या तथापि यो गयो वणियानी का घड़ा उठाइवे को वाही ता समय
घड़ा उठाइवे के लिये पास गया ता समय कुच मर्दन कियो अरु
चुंवन कियो वड़ीवार ताही समय वनियां आ गया देखा और कही
यह काम अच्छा नहीं है खवरि परैगी मैं द्वार में पुकारों गो तव वह ब्रा
ह्मण डरा और अपने आसन पास गया वितर्क नाम ब्राह्मण सो क
ही जो मैं कुकर्म करता वनेनी से उसका धनी आया वाने कही कि
राजा के आगें पुकारों गो तासें तुमको पूछता हूं कि मैं कहा करों तव
वितर्क ने कहा कि हांहां कहियो और वचवच कहियो कि जो य
ह वात सिद्ध वाई ताही समय राजा के आदमी आये और पकड़ करले
गए जब वहां गयो तव राजा ने पूछा कि हांहां करि फिर वचवच काने

लगा तब सबने कहा यह बावला है इसका स्वभाव यही है तिससे कछू मत कहो संकट परे जो ऐसी मति आवे तो जाव इतनी बात सुन प्रभावती सोरही ॥१३ कथा समाप्त ॥

अथ चतुर्दश कथा का प्रारंभ १४

फिर चौदहवें दिन प्रभावती सिंगार कर पर पुरुष से रति करने चली तब शुक बोला जाती तो हो परंतु जागे वे जागे जैसे वल्लभा ने साहस किया वैसा कन आवे तो जाव तब प्रभावती बोली क्या साहस किया बता ओ शुक कहने लगा कि एक प्रतिष्ठा नाम पुर था तहां का राजा देवपाल और शुभकरन बनिया था और वल्लभा नाम स्त्री थी एक दिन शुभकरन स्नान करने को बैठा तही समय वल्लभा एक वार सो संकेत हुई तब पति सों चतुराई सों बोली जो जल नहीं नहायगा काहेसों जो कहो तो तालाब सों भी लाऊं तब पति बोला अच्छी बात है इतने में वल्लभा चली सो संकेत अर्थ गई वासो मनोरथ हतो सो पूरन कियो तामें एक पहर लगयो इतने में विचारी जो सब जाऊंगी तो कहेंगे कि तू कहां रही थी तब उत्तर क्या दूंगी तिससे यह विचारी जो बहुत बहुत आदमी पानी भरते हों तहां चलिके विचार कर वहां गई वह देखे तो बहुत भीड़ है वहां भरने लगी उसी समय गोहर में गिर पड़ी इतने मे लोगों ने शुभकरन से जाकर कहा कि तेरी स्त्री गोहर में गिर पड़ी है तब तो सिर मिट गई वहां को गया और देखे तो सचही तब निकाल कर पूछा कि कैसे गिरी तब वल्लभा बोली कि मुझको लघु बहुत थी यहां भी इह तीही सो तहीं तासों गिर पड़ी याते एक पहर लगा सुनके घर ले आया तासों प्रभावती ऐसो साहस होतो जाव नहीं तो मत जाव इतनी बात सुन कर प्रभावती सोरही ॥

अथ पंद्रहवीं कथा का प्रारंभ १५

फिर पंद्रहवें दिन प्रभावती सिंगार कर पर पुरुषके पास रति करने को चली तब शुक से बोली हे शुक मैं जाती हूं शुक बोला अच्छा पर सिंगार देव पाणी सो मति उपजे तो जाव तब सुनकर प्रभावती बोली सो

कहो तब शुक बोला एक रम पुर नाम नगर है ताको राजा नर सिंह म
हता ताके गांव में धन पाल नाम बनियो वस्ता है ताकी वधू सिंगारी
नाम बड़ी चतुर थी पर धनी पूरवे था और पुरुषों से भोग किया कर
ती थी परंतु पति न जानता थाएक दिन अपने पति को जिमाती थी ता
समय यार आया तब वाणि मेंसे झांकी और आखों से इसारा किया तू
चल में आई यह कह ताही समय बुद्धि उपजाई पांव से घी फैला
दिया देख पति बोला जोरू बह कैसी खाड़ जरा ले तो आ ताही समय
चली सो यार पास पहुंची उस से अच्छी तरह भोग किया एक पहर बी
तब मन में विचारा पति गुस्सा होगा तब एक चौहटे में बैठा गोदी
मे धूर बहुत भरि तामे घी डार दिया और रोती चली आवे देखी तो
भर्तार बहुत कोपा कि कोढ़ फिर देखा तो स्त्री रोती चली आती है त
ब तो रिस भूल गया और पूछा तू को रोती है और तेरी गोद में धूर
क्यों भरी है तब स्त्री कहने लगी जो तुम ने कहा सो वेगा ले आवती दी
ए गई और सौदा लिया लेकर चली ताही समय ठोकर लगा सब धू
धूरि में गिर मिल गया तब उठाने लगी तासों आवा लगी जब न उठात
ब सब समेट ले आई यह बात सुनि गिरधर बूझई हे प्रभावती ऐसी बुद्धि
उपजे तो नाव इतना सुन प्रभावती सोरही १५ समाप्त ॥ सुभंभूयात

अथ सोलहवीं कथा का प्रारंभ

फिर सोलहवें दिन प्रभावती सिंगार कर पर पुरुष से रति करने चली
तासमय शुक सों पूछा हे शुक मैं जाती हूं तब शुक बोला अच्छी
बात है परंतु रुक्मिनी कैसी बुद्धि उपजे तो जाव तब प्रभावती बो
ली कैसी बुद्धि उपजी सो कह तब शुक बोला एक विसाला नाम नग
री विजैसेन राजा था तिसके गांव में धर्मदास सेठ वस्ता है ताकी स्त्री
रुक्मिनी भर्तार सो कपट कर अति स्नेह राखे तासो वह माने कि
पतिव्रता है अपने धर्म मे सावधान है एक समय भर्तार परदेश को गा
या पीछे वसंत रुत आई कामीदीपन भयो ता समय एक धूती को
बुलाया और कहा मैं रति करना चाहती हूं किसी अच्छे पुरुष को ले आ

तब दूती कहा अच्छी बात है यह कहकर गई और कि सी पुरुष को ले आई वह बहुत चतुर थी देख के बहुत खुस हुई स्नेह कीनो नित्य आवे रति करे बहुत प्रसन्न रहे एक दिन यार सों लड़ाई भई गुस्सा हो गई ताही समय रुक्मिनी की चोटी काढ लीं फिर चला गया उसी दिन भर्तार आयो तब भर्तार ने पूछा कहो अच्छे हो यहां बैठो तब कही न्हाइ के पूजा कर आऊं तब बैठोंगी ऐसा कह पूजा को गई दो घड़ी लगाई पीछे आई भर्तार सो मिली तब भर्तार ने पूछा कहो तुम्हारी चोटी कहां गई जो तुम परदेश गये थे सो देवी को मानी थी कि हे देवी जो मेरा पति आज दिन आवेगा ता दिन तेरी पूजा करोंगी सो पूजा कीनी चोटी चढ़ाई तब तुम सों मिली भर्तार बहुत खुश भयो कि ऐसी पतिव्रता है मोको बहुत चाहती है तातें प्रभावती ऐसी बुद्धि उपजे तो जाव नहीं तो मत जाव प्रभावती इतनी कथा सुन ॥

सोरठा ॥ **अथ सत्रहवीं कथा का प्रारंभ**

फिर सत्रहवें दिन प्रभावती सिंगार करके भोग करने को चली तास समय शुक सों पूछा हे शुक मैं रति को जाती हूं शुक बोला अच्छी बात है परंतु साहिब दे कानेवर उतार लिया तब बुद्धि करी और फेर लिया जो ऐसी बुद्धि होइ तो जाव तब प्रभावती ने पूछा कैसी बुद्धि करी सो कहो तब शुक बोला एक विसाला नाम नगरी थी तहां विजय सेन राजा राज करता था तहां समरत्थ नाम वनिजो वस्ता है ताकी स्त्री जयंती ताको पुत्र गुणाकर नाम है ताकी स्त्री साहिब दे नाम है बहुत चतुर प्रवीण है काहू की संका नहीं सब घर के भी जानें और पर पुरुष सों भोग करे एक दिन रति करती हती तास समय ससुरो जाय पांव का जेवर उतार लिया साहिब दे जानी जो ससुरो उतार ले गया तब आप सांची होने के लिये भर्तार पास आके सोरठी फिर रुदन को के लगाया जब उहा तब यों बोली मैं तुम सक्या कहूं मगर कहा चाहिये यह तुम्हारा बाप मेरा जेवर उतार ले गया मैं तुम्हारे पास सोती थी यह बात सुनकर क्रोध भयो जो वह सो ऐसी हंसी क्या है यह तो

बात लाज की है तब भाइ अपने बाप सों कहा कि तुम को ऐसी नच-
हिये जो बहू के पाव का जेवर उतार लेव लाज नहीं आई तब पिता
सुन लज्जा मान भया और यह कहा कि यह बात काहू सों कहि-
यो मत मैं चूका इतना कह जेवर देदिया बेटा ने लेजाकर बहू को
दिया और यह कहा कि काहू के आगे कहियो मत परंतु ऐसे नि-
र्लज्ज स्वसुर को तो लज्या आई पर बहू को न आई वा सों प्रभाव-
ती ऐसी बुद्ध हो तो जा नहीं तो मत जाव इतना सुन सोई ॥

॥ अथ अठारहवीं कथा का प्रारंभ

फिर अठारह वें दिन प्रभावती सिंगार कर पर पुरुष के पास
भोग करने चली ता समय शुक सो पूछा हे शुक मैं जाती हूं
तब शुक बोला अच्छी बात है परंतु मम विगारी कोसी मति उपजै तो जाव
तब प्रभावती बोली कैसी सो कहो तब शुक बोला विसाल नाम नगरी वि-
सुसेन नाम राजा राज करता था तिस के गांव में वल्लभ नाम बनिया
रहता था तिस की स्त्री मुग्धिका महा व्यभिचारणी थी चौहटे में है
उस सब कोई जाने काहू के सों नहीं रात्रि दिवस पुरुषों से रति करै
किसी का कहना न माने सदा बाहर ही सोवे सब ने कहा या माने न-
हीं तब सबोंने मिल राजा पै पुकार कि हमारी बहू मानती नहीं तब
राजा का हुकम भया जो कोई बाहर रात्रि को रहैगा सो राजा का स-
जा वार होगा यह नगर में डौंडी फेरी मुग्धता तो सदा बाहर रहै जब
यह बात सुनी तब तो रात्री घड़ी चार पांच तांई रही यार सो मिलाप
कर पीछे आई ता समय पति ने किवाड़ दे लिया बहू तेरा पुकारी प-
र खोले नहीं तब उसने बुद्धि उपजाया जो तुम नहीं खोलोगे तो मैं कु-
एं में गिर पड़ूंगी ऐसा कह एक पत्थर बड़ासा लेकर कुएं में डा-
ला पुनि याके भर्तार ने धमका सुन जाना कि गिर पड़ी यह जा-
न किवाड़ खोल बाहर निकला और कुआं देखने लगा ताही स-
मय वह घर में जा बैठी किवाड़ दे दीने और सोरही तब भर्तार ने
पुकारा कि किवाड़ खोल तब बोली कि नहीं खोलूंगी बहुत देर

ताई पुकारा किया तब यह कही जो आज पीछे मेरा नाम न
लेवे तो खोले तब भर्तार बोला कि नाम नहीं लूंगा हाथ जो
इसके पड़ा वचन दिया तब घर में आवन दिया तासों प्रभाव-
ती ऐसी बुद्धि उपजै नो जाइ तना सुन सो रही ॥

अथ त्रयोदशवीं कथा का प्रारंभ

फिर उन्नीस वें दिन प्रभावती सिंगार कर पर पुरुष से भोग करने
चली तो समय शुक सों पूछा हे शुक मैं जाती हूं तब शुक बोला
हां तेरे मन आवे सो कर शास्त्र तो यह कहता है श्लोक ॥ दृ
पूतन्यसेत्पादं वस्त्र पूतं पिबज्जलं सत्य पूतं वदेत् वाक्य मनः पूतं
समाचरेत् १ जो मन में आवे सो करे परंतु गुनाढ्य नाम ब्राह्मण मन
को जान्यो कि यो तेसे तुम हूं करियो यह सुनि प्रभावती कही वहीं न
हो तब शुक बोला एक विशाला नाम नगरी है विजय सेन राजा राज
करता था वहां जाइके नाम ब्राह्मण की स्त्री स्वरूपी थी ताको गुणाढ्य
माता पिता को छोड़ परदेश को गया जयंती नगरी में जाइ पहुंचा रो
जगर को गया वन जाति का धरिया जो मैले वस्त्र एक थैला में
एक लगाई शहर में फिरने लगा तब लोगों ने जाना वन जाति है व
हां मदन वेश्या की दासी ने पूछा तू कौन है तब वह बोला मैं वन जा
ति हूं राजा से मिलूंगा खांड बेचने को भाव पूछूंगा तू जाती होगी तब
तो दासी जानी यह धन पात्र है यह जान आदर किया और घर में
राखा रात्रि को वहीं रहा वेश्या जान्यो धनाढ्य है यासों इश्क लीजै
यह जान स्नेह कीनो रात को संग सोई फिर एक पहर रात रही त-
ब उसका जेवर २५००) रुपये का उतार लिया और भाग देश को
गया जब सवेरा भया तब मदना जागी देखे तो खांड का थैला है सो
वह नहीं है और गले का जेवर भी नहीं है तब तो बहुत सोच किया
ऐसो धनी आपने धन को किया जो ऐसी कुछ बुद्धि होती जाव नहीं
तो मति जाव इतनी बात सुन प्रभावती फिर सो रही ॥ इति ॥ श्री

अथ बीसवीं कथा का प्रारंभ २०

फिर बीसवें दिन प्रभावती पर पुरुष सों रति करने चली तब शुक सों पूछा हे शुक मैं जाती हूं शुक ने कहा अच्छा परंतु गोभिल्ल बनिया ए यों कीसी बुद्धि हो तो जाव तब पूछी कैसी बुद्धि सो कहो तब शुक बोला एक पद्मावती नगरी है वहां का पुरुषोत्तम राजा ताके गांव में दरिद्र बनिया रहता है ताके घर में एक दिन गोभिल्ल बनिया चोरी को बैठा वहां देखा तब राजी बास फिरता है कछू न मिलो लेकिन चार सेर सरसों पायो ता समय धनी जागा तो पुकारा ताही समय राजा के सिपाही आये चोर पकरो पास सरसों निकसे राजा के पास गये सब नगर कहत फिरे जो चोरी करेगा ऐसी गति होगी तब २ गोभिल्ल नाच २ हस २ कहा मैं न मरोगो मेरी रक्षा भई बड़ी तब राजा सुन आश्चर्य माना तब राजा ने पूछा तू क्यों न मरेगा पराया धन सरसों है तू क्यों न मारा जायगा तब यह बोला महाराज मेरा ब्याह भयो तब पांच सरसों बांधी थी अब चार सेर भई। तासों बड़ी रक्षा है तब राजा बोला यह चोर नहीं कछियाको छोड़ दो राजा की आज्ञा से छोड़ दिया है प्रभावती जो ऐसी बुद्धि उपजै तो जाव नहीं तो मत जाव इतना सुन सोरही॥

अथ इक्कीसवीं कथा का प्रारंभ

फिर इक्कीसवें दिन प्रभावती सिंगार कर रति को चली तब शुक बोला जावे तो सोचा बनिये कीसो कीजो नहीं मत जाव तब प्रभावती बोली सो कहो तब शुक बोला एक हरनाम नगर है गुण आय राजा है ता गांव में सोचा नाम एक बनियो ताकी स्त्री कीर्तिका है बड़ी पतिव्रता है परंतु वाकी पगांमिन महा गर्वीली है परंतु सोढ़ा के मन में नाहीं तासों कहे बने नहीं एक दिन सोढ़ायना की सेवा को गया ताही समय पगांमिन गई कि सीसे भोग कीनो ताही समय स्त्री ने बुद्धि विचारी कि कुछ इन को दीजे यह बोली कि भाइयो निराई बाढ़ू अरु मोद बूंदी लेहु पर एक काम हमारा करो शहर में ऐसे पुकार के कहो एक बैल चरव

त है सो एका कोई धनी हो सो ले जाय इतनी बाते कह आवो म
तुम्हारा गुण मानेंगे इतना सुन जा पुकारा ताही समय मोढा की
स्त्री ने सुनी मन में चिंता करने लगी कि बड़ा अनर्थ भया मन में
विचारा कि जो पक्ष के मंदिल में से चरू की परोसन कर मेरो य-
ह जानि बुद्धि उपजाई अपनी नंद को सुरत जगाय साथ लीनो
और लड़का को गोद में लिया सब कहें कि कहां जाती है तब वो
ली पक्ष के पूजा के लिये जाती हूं सब ने कहा अच्छी बात है जा-
व ताही समय दोऊ जनी पक्ष के मंदिर में गई वहां देखे राजा की
चौकी है तब भीतर जाने लगी तब चौकीदार बोले राजा के चौकी
में हैं तू मत जाय तब बोली उनमे मेरा काम है नहीं मैं तो अकेली
पूजा कर आऊंगी तब चौकीदार ने कहा अच्छा जाव करो तब
कहा भला है इतना कह नंद को लड़का दोगाई देखे तो परोसन बै-
ठी है तब अपने के पूत वाको दिये वाके आप पहर वाको बाहर का
ह स्त्री पुरुष वहां रहे वे सब घर आये सवेरे राजा को खबर भई म
जो मंदिर में घिरे उन को ले आओ ता समय कुतवाल गया देख
तो स्त्री पुरुष हैं देख कर बहुता उपजा यह का बहुत कायल भ-
यो सीखदे अपने घर गया तासों प्रभावती ऐसी बुद्धि उपजै तो
जाव ये सुन सोरही॥ **अथ बार्दसवीं कथा का आरंभ**
बार्दस वें दिन प्रभावती बोली शुक मैं जानी हूं तब शुक बोला के
लिक नटनी कैसा जवाब आवैतो जाव तब बोली सो कहो शुक
बोला समरमती के तीर पर संख पुर नाम नगर है वहां का सुदर्श
ननाम राजा है तहां सुरादप नट रहे ताकी स्त्री कलिका गरीब रहे
ताको मित्र मुहकरण ब्राह्मण है नदी के तट वाको घर है महा
देव का पुजारी रहै एक दिन परोसिन के संग पानी को गई पति
पीछे देखने को चला तब कलिका परोसिन से कही कि पार जाऊं
पूजा कर यार है वासों भोग कर आऊं तुम घर जाव ऐसा कह घड़ा
पर चढ तैरती२ पार गई पर सों केलि करी प्रसन्न किया पीछे घ-

शुक बहत्तरी

रु आई आतेही देखा पति पोसिन के किवाड सों खड़ा है सब भ-
आरयन की संज्ञा सो बताई तब पोसिन के निकास सो खड़ा है।
अब आखिन में बोल कही कोलिका तू अच्छी बात कीनी शिव के
दर्शन किये तेरे पति की उमर बढ़ गई मुझे बहुत चिंता थी तेरे पति
की उमर नहीं रही जो पांच दिन ताई जाय तो पति दृष्टि को पावे
भला होय तब कोलिका बोली जो पति जीवे तो हम दिन जाऊंगी
तब ये बात पति सुनके प्रसन्न भया कि मेरी स्त्री पतिव्रता है ये जा-
ने तो जाव है प्रभावती नहीं तो मत जाव इतनी बात सुन सोरही॥

अथ तद्सप्तमीकथा का प्रारंभ

फिरतेदिन वे दिन प्रभावती गति को चली शुक से पूछा है शुक मैं
जानी हूं अच्छा पर मंदोदरी की सी बुद्धि उपजै तो जाव तब प्रभा-
वती बोली सो कथा कहो तब शुक बोला एक प्रतिष्ठा नाम नगर है
तहां का हेम प्रभा राजा है तहां धनी धर्म सेठ है ताके मोहनी स्त्री
है ताकी बेटी मंदोदरी है सो कांति नगरी में व्याही है सिविवत्स
सेठ के यहां एक दिन सेठ सासरे आया कोई दिन ससुरार में
रहा स्त्री को गर्भ रहा जब पांच मास भये एक दिन मन में आई
कि मोर भक्षण करों एक दिन राजा को मोर आइ बैठा चुगा डार
बुलाया और पकड़ा मार कबाब करि खाया जब ध्यान का सम-
य भया तब राजा का बेटा बोला मेरा मोर कहां आदमी देखता फि-
रे परंतु नहीं पाया आय कुंवर से कही कि नहीं पाया तब दौड़ी
फिरी कि जिस ने मोर लिया होगा राजा का गुनहगार होगा ये क-
ह चुप होरहे और यह कहा जो मोर का पता देगा लाख टका दूंगा
इतना कह दूती बुलाई तब कोतिका दूती हुजूर में आई तब हु-
क्म भया जो मोर का पता देवे तो लाख टका दूंगा तब दूती ने क-
हा आठ दिन में पता दूंगी यह कह सलाम करि घर आई मन
में सोचा मालन का रूप करके तलास करूं यह विचार फूल ले घ-
र २ फिरने लगी फिरते २ श्री वत्स के घर गई मंदोदरी बैठी थी॥

जहां जा फूल आगें धरे स्नेह कीनो मन की वात पूछी सब वह क-
हे जा धूर्त के लक्षण है श्लोक ॥ मुख पद्म दला कारं वाचा चंद-
नसीतलहृदय कर्तरी युक्तं विविधं धूर्त लक्षणं १ तासो ऐसो मिल
गयो वाही की है एक दिन पूछा तेरा मन काहे पर है सो मैं लाऊं
और जो चित्त मांस में हो सो लाऊं एते कह श्लोक कहा ॥ ए-
णां कुरंगोष्ट्र भशा तितिरे लाव मेवच मयूरवी भिकोर मार्च श्रे-
ष्टा मांस गुणा धिकाः १ इतने में जो कहे सो लाऊं मंदोदरी
बोली मुझे नहीं चाहिये तब बोली तू काहे को मांस खाइ है मंदो
दरी बोली मयूर को मांस खाये हूं कुटनी बोली मयूर कहां पाया
मंदोदरी बोली राजा का मोर आया मेरा मन चला मैं वाको मार खा-
या ये कुटनी सुनके गई बोली महाराज मैं पतालाई हूं यह सुन
राजा बोला वृतांत कह कुटनी बोली यसोधर सेठ की बहू गर्भवती
है वाने मोर खाया है उसे का मन चला इतने में मोर वहां गया उस
ने मार खाया यह सुन राजा के मन में नहीं आई वासो ऐसा काम
न होगा तू झूठ कहती है मंदोदरी मेरे सामने कहे तो मैं मानूं कुट-
नी बोली मैं मुख से कहवा दूं यह कह मसूसे में धर राजा को ले-
गई मंदोदरी के आगे रखवा और यह कहा मैं तीरथ को जाती हूं या
में मेरा माल है तुम धरि रखवो ऐसा कह मसूसे के ऊपर हाथ
फेरा कहने लागी तूने मोर कैसे खाया सो कह तब मंदोदरी नेह-
कीकत कही कुटनी बोली मसूसे सुन तब मंदोदरी बोली या
मे कुछ है यह जान बोली बात तूने साची जानी मैंने स्वप्ने की बात
कही ऐसा देखा तब जाग पड़ी तो फिर न देखा चोर ने देखा फिर
मैं उठ बैठी कुटनी का सुन तेही मुह बिगड़ गया मसूसे को ले
के राजा के घर आई राजा गुस्सा हो कुटनी के नाक कान काट
लिये जो ऐसी बुद्धि हो तो जाव नहीं तो मत जाव इतनी बा-
त सुन कर सारहु ॥ इति ॥२३॥

अथ चौवासवीं कथा का प्रारंभः ॥

फिर प्रभावती चौवीस वें दिन रति को चली शुक से पूछा हे शुक मैं जाती हूं शुक बोला अच्छी बात है पर मीठका कामा उनर आवे तो जाव तब बोली कहो तब शुक बोला एक उमिल गांव है दानसील राजा है तामें सोम दास वर सुनी है ताकी स्त्री मीडि का है सो महा गरीब गरु चलै विचार करै एक दिन सोम दास खेत को गया उस के खाने को भात रोटा ले चली सो गरु में सुरपाल यार मिल गया वासों भोग करने लगी रोटो भात दूर धरे लगी मन में विचारी को-वालेजायगा तासों ऊंची टांग रखवो इतने में मूल देख मगावादी आया मंत्र सों भात उड़ाया और ऊंट का लेंड भरदिया रति होचुकी जब देखा नहीं वैसेही गई और पति के आगे रखवा पतिने देखा तो ऊंट का लेंड है तब पति बोला यह का मीठका बोली कि रात को मैंने स्वप्न देखा था कि ऊंट तुम को खाता है यह स्वप्न अच्छा नहीं तासों ऊंट का लेंड लाई हूं जिससे तुम्हारी रक्षा हो ऊंट का लेंड खा कष्ट मिटे यह सुन ऊंट के लेंड़े खाये और स्त्री को सती जाना जो ऐसी बुद्धि उपजै तो जाव इतना सुन सोरही ॥

अथ पचीसवीं कथा का प्रारंभ

फिर पचीस वें दिन प्रभावती पर पुरुष के साथ रति को चली शुक से पूछा मैं जाती हूं शुक ने कहा जो धूर्त माय कुटनी कीसी बुद्धि उपजै तो जाव प्रभावती बोली सो कहो शुक बोला चंपावत नाम एक नगर है सुदर्शन राजा है चन्द्र सुंदरी रानी राम चन्द्र प्रधान वेद सेन प्रधान साह प्रभावती भार्या ताको सम सिंह वर्ष को बैठाया था तहां कुटनी दुष्ट उस बाग में है ताको साह बुलाया कहो तुम को लजार मुद्रा देउंगी जो मेरे बेटा को विचक्षण करै तो खुस करों ये सुन कुटनी बोली से साह तेरे बेटे को ऐसा पढ़ाऊं जो रूप नहि ये कोई हजार मुद्रा लानी और बेटा को लीनो आपने घर गई पांच वरष राखा सगली कला सिखाई प्रवीन करके पिता को सौंप दिया पिता ने प्रवीन जान का सिंगल द्वीप को व्योपार

के लिये भेजा वह गया वहां एक कला वती वेश्या रहती है याके
घर एक वर्ष रहा वह तब अनुरक्त भयौ तब एक दिन राम सिंह
वेश्या से कही कि ऐसी वेश्या कोई नहीं जो मोको वश करै तूने व-
श कीनों ये सुन कलावती अपनी मा से कहा कि ऐसे कहत है
परंतु महा धूर्त है वस नहीं इससे किसी तरह द्रव्य लीजे यह अ-
पने घर जायगा तब बोली प्रपंच कीजे जब राम सिंह चले तब तूभी
कहियो मैंभी चलूंगी और नहीं तो प्राण जायगा ऐसे वि चार की-
नों इतने में राम सिंह आया और कहा मैं अपने देश को जाता हूं
यह सुन रोने लगी कि मुझे भी ले चल नहीं तो प्राण त्याग करू-
गी यह वि चार कीनों वाकी महतारी आई यों काहे तू काहे को कर-
त है ताही समय राम सिंह विचार किया याने विचारी है सो करेगी
तासों द्रव्य की लालच छोड़ दीजै द्रव्य दे अपने घर गयो पिता-
को पुत्र देख बोला खेद मन करो अब अच्छा है ऐसा कह उन को स-
मझाय दिया तब पुत्र सिंगल द्वीप की बात कही तब पिता पुत्र को स-
मझाय पीछे कुटनी को बुलाया कि मेरा पुत्र सिंगल द्वीप को गया
था सो द्रव्य देआया भलो पढ़ाया सो हमारी द्रव्य तने देडाली तब
कुटनी बोली मैं सेग पुत्र को पठाओ देखो कैसा काम करआऊं और
कलावती लई सो द्रव्य लाई और नाकों लाऊं इतना कह सिंगल द्वी-
प को सिधारे नहा कुटनी चांडाली का भेष कियो पठ ले राम सिंह-
को समझाये एक दिन राम सिंह कलावती के बैठा है कुटनी चां-
डी के भेष से वेश्या के घर गई देखे तो वह वेश्या पलंग पर बैठी है देख
तेही आगें आई दाढ़ी भई और बोली साह के बेटे मैंने अब तोको
पायो तू बड़ा चोर है मेरा द्रव्य चुराया अबकी हार मैं राजा सों पुकारों
गी दीजे न बधाऊंगी यह कही वेश्या पूछा ये कौन है राम सिंह
बोला मेरी माता है याको मूस लाया तो को दिया ये कही तब कु-
टनी को भीतर बैठाया वाके पायन परी बादी समय कुटनी ने ला-
न दीनी तब तो हाथ जोड़े और कही जो कहे सो करू तब कुटनी

कही जो द्रव्य देतो छोड़ूं वाने द्रव्य दीनो लेकर घर आई वेदा द्रव्य साह को सौंपा जो ऐसा जवाब आवे तो जाव नहीं तो मत जाव इतनी सुन प्रभावती सोरही ॥२५॥

अथ छवीसवीं कथा का प्रारंभ

फिर छवीसवें दिन प्रभावती रति को चली शुक सों बोली मैं जानी हूं शुक बोला अच्छा परंतु सोहनी की सी बुद्धि उपजे तो जाव तब बोली शुक कहो तब तोता बोला कि सरव पुर नाम नगर है तहां सोमेश्वर राज करतो है तिसका धन सेठ तिसकी स्त्री सोहनी अति चंचल है कोई नगर में छोड़ा नहीं परंतु दिवा दिव्य आह्मण सों नित क्रीड़ा करती तब पति ने क्या किया अकेली छोड़े नहीं तब सोहनी ने दूती को कहि पठायो मिल से यह कहियो कि तू रात को आइयो क्रीड़ा करेंगे एक दिन आह्मण रात को आया देखे तो स्त्री पुरुष दोनो सोते हैं तो कहा काम किया एक तरफ पति दूसरी तरफ आप जा सोया छाती पर हाथ धर सोया तासमय पति छाती पर हाथ धर के देखे तो दूसरा हाथ है हाथ पकड़ा चोर कर पुकारा और कही दीया करो स्त्री कही मो को डर लगत है और तुमही दीया करो ये सुनि पति उठा दीवा करने लगा तासमय वामो रति की हाथ को पकड़ाव ह तो भाग गया पति दीवा ले आया देखे तो पड़ा को हाथ में है तब खिसियानों सोहनी बोली हे स्वामी यहां चोर नहीं तुम को भ्रम भयो वात बनाय दीनी पति चुप होरहा ऐसी बुद्धि होइ तो जाव इतनी बात सुन प्रभावती सोरही ॥२६॥

अथ सत्तादसवीं कथा का प्रारंभ

फिर सत्तादसवें दिन प्रभावती बोली शुक मैं काम क्रीड़ा करने जातीहूं शुक बोला श्रेष्ठ बात है परंतु देवकी कासा उत्तर दो तो जावत व वह बोली शुक कैसा दिया सो कहो तब शुक बोला एक कुसमग्राम पाटन कुंवर पाल राजा है अमकरन कुनवी सुखदेव ताकी स्त्री वदुत

गीत लेकिन भजा करणा ब्राह्मण से आसक्त एक दिन सबने कुनवी से कहा तेरी स्त्री ब्राह्मण से दीखवे सुत संकेत थल रूख पै चढ़ावो देखने लगी देवकी प्रभाकर दोनों रमण करते हैं तो कुनवी बोला दुष्ट जौन ऐसा कर्म करता है दे ब्राह्मण का देवकी को छोड़ा नहीं तो बहुत क्रोध भया रूख से उतर ना तो पति को देखते ही भागा तब देवकी बोली कि पति काहे को तो तेरे देखते रति करे गया प्रकार छुड़ावो नहीं तो पति बोला मैं तो न देखा स्त्री कही यामें भूत है याने मोसों कुकर्म कीनों पति बोला मोसों लड़े तो भूत नहीं तो कूठ स्त्री बोली मैं रूख पर चढ़ती हूं यह कहि रूख पै चढ़ि पुकारी लो इससे दे वहै सो समझ लीजो पुकार कै कही तो ब्राह्मण भूत का रूप धरि कुनवी को पछाड़ा ऊपर ते बोली यही है मोसों भी भोग किया है सुन तेही ब्राह्मण भाग गया स्त्री उतर आई पति बोला तू सांची है फिर घर आई सो हे प्रभावती ऐसी बुद्धि होती जाव इतना सुन सोरही ॥२७॥

अथ अट्ठाईसवीं कथा का प्रारंभ

फिर अट्ठाईसवें दिन प्रभावती रीत को चली शुक से कहा मैं जाती हूं शुक बोला अच्छा परंतु मूलदेव मंत्र वारो उतरूंगा वेगा आवो बोली उसे कहो तब शुक बोला एक समशान है तापै भूत दो रहते हैं एक का दूसरा उताल होउन में झगड़ा पड़ा दोऊ आपस में यह कहैं कि अगनी २ स्त्री को अच्छी कहते हैं कोई नामें नहीं तासमय मूलदेव मंत्र वही आया तामें दोऊ बोले हमारा झगड़ा तुम चुकाओ मूलदेव बोला तुम्हारा झगड़ा क्या है तब कहा स्त्री कौनसी अच्छी सो कहो तब विचारा सांची कहेंगे तो एक न एक मरेगा यासमय मन में विचार और यह कहा जाकी स्त्री प्यारी है साकी स्त्री अच्छी तब दोऊ राजी भये सो हे प्रभावती

ऐसी बुद्धि उपजै तो जाव दूतनी बात सुन सोरही ॥२८॥

अथ उन्तीसवीं कथा का प्रारंभ

फिर उन्तीसवें दिन प्रभावती रति को चली शुक बोला जाव परंतु सुबुद्धि कारा कीसी मति होइ तो जाव तब बोली कहो शुक बोला एक मगध देशमें चंपक बन वहां अनेक दिन तो चंपा के रूख पै सुबुद्धि कारा और वाकेतले चिंता हिरन रहै उन दोनोंमें प्रीत थी वहां हिरन को एक दिन काहू स्यार ने पुष्ट देख मन में विचार किया प्रीति करो तो याकोमासखा ने को मिलै यह विचार हिरन के पास आयबोला मित्र तुम कु शल रहतेहो मृग कही भाई तू कौन है सुन हिरन ते कही मैं शुद्र बुद्धि स्यार हूं या वन में मित्र कर हीन निर बंधु अकेला बसताहूं आज तुम्हारा दर्शन हुआ मेरे जी मे जी आया अब तिहारे पायन रहियो और संग लग्यो सांझ भई जब सुरंग अपने आश्रम को गया साथ भया निदान चले चले वहां आए जहां मित्र था काग स्यार को कागने देखा मित्र यह कौने है मृग कहा यह स्यार है और मोसों मित्राई करना है काग कहाय देशी से प्रीत न कीजै कहा है जाकी सील स्वभाव आश्रम न जानिये तासों प्रीत न करिये और नीत तो यों है कि अपने घर मेंवासन दीजे यह बात सुन स्यार कोध हो बोला मित्र जा दिन हिरन से मिताई करी तादिन तुम्हारा खेल स्वभाव कहांजा नतहो जो मिलबैठो तातें अपना पराबा कहना सूरवीका काम है पंडितों को तो सब अपने ही हैं जैसे मृग हमारा यार है तैसे ही तुम और भलो बुरो व्योहार ही से जाना जाता है काग ने कहा मित्र वाद नहीं करो जो जहां रहै वही भाई अपनी २ सब भली चिंता मन उदर की करहै गद सांझ को इकठे भये ऐसी भांत वहां रहने लगे एक दिन स्यार ने कहा मृग हम तेरे लिये जो का खेत देख आये है सो मेरे साथ चलियो सो गया और

चरने लगा रोज ऐसे जा चरे एक दिन रखवारे ने देख फंदा
रोपा जब जौ चरन लगा फंदे में पड़ा कहै मित्र बिन कौन नि-
कालै स्यार फांसी देख खुशी भया मेरे कपट का आमिलाफ़
ल रखवारो मास ले गो हाड़ डा लेगा उन्हें हम खावेंगे ये खु-
शी मृग ने जानी मेरे दुख से व्याकुल है पर यह ना जान कपटी
है तब स्यार की दसा देख मृग कहा तू नाहक फट फटाता रे
र हवा सो इसा जाल तो तांत का है और मेरा आठ दिन को
उपास है सो तांत से कैसे काटो और जब होतो चिंता नहीं व-
हुत विचार किये इतने में रात व्यतीत भई और वहां बुहिका-
र जन गा मृग को देखा नहीं विचार किया रात भर नहीं आ-
या तब चल के देखा कि जाल में फंसा है काम आवे वही मि-
त्र सुन हु मैं तेरा कहा नु माना ताको फल है सुन कागक-
ही तेरा जो मित्र कहावै वह तेरे मास का लोभी कहीं होगा
अपना सा सादा स्वभाव सबका जाना और दुष्ट का यह स्वभा-
व है जो बातें करे भलाई पहले पावन पर पीछे करे बुराई हि-
तकारी तासों प्रीत न जाय उस के तई दुष्ट समझना चाहि-
ये जो कपट कारी कुमारग वत लावे और मौका पाय घातक
रे जैसे मच्छर पीड़ पावे आय कान से लग समय पाय डंक
मारे तैसेही दुष्ट जन ता समय कहत हो कि वैरी का वि-
स्वास न करें ये बातें सुन मृग ठंडी स्वास ले बोला जो कुटी
बाते कर और को बुरा करते हैं तिन का भार पृथ्वी कैसे स-
हत है ऐसे बतराते थे तो लों रखवारो आयो काग ने कहा म-
तक हो रह जब मैं पुकारों तब भागियो यह सुन वैसाही किया र-
खवारे ने मृग को देख जाना कि मरा है अब याको कहा मारो आगे प-
रा जान बंधन खोलने लगा और फिर चाहा कि उठाऊं त्योंही काग
बोला मृग भागा तब रखवारे ने खिजाल कर लकड़ी मारी सो स्यार
मूंड में लगी लगतेही मरो ऐसे और भी कहा है तीन दिन तीन

गत तीन महीना या तीन वर्ष में पुन्य और पाप का फल मिल-
ता है तासो ऐसी बुद्धि होतो जाव यह सुन प्रभावती सोरही ॥

अथ तीसवीं कथा का प्रारंभ

फिर तीसवें दिन प्रभावती गति को चली तब शुक बोला जादूये
पर धूर्त कीसी बुद्धि उपजे तो जाव बोली कहो तब कहने ल-
गा कि पिंगल नाम एक सिंह बन में रहता है महा दुष्ट है व
हुत जीव नाश करता है ऐसे बहुत दिन भया तो वहां के जीव
सब दुखी भये उस से हाथ जोड़ तुम हमारे राजा हो हम बहुत दु-
खी हैं तासो सब जीव विनती करत हैं कि एक जीव नित्य लीजे औ
र बन की रक्षा कीजे सिंह ने मानी सब खुशी भये नित्य अपनी
वारी से जाय सिंह खुशी भया एक दिन ससा का औसा आया स
सेने मन में विचार कि वाको बंधना कीजे ऐसे विचार सारी
दिन बिताया जब संझा भई तब तो गया जो देखे तो सिंह बहुत
भूखा है यासों बहुत क्रोध भयो तासमय ससा आगे ठाढो भयो
तब सिंह बोला दूर कहा लगाई तब बोला महाराज मैं आया हो
मो पर क्रोध काहे पर कीनो मैंने अपराध किया है परंतु एक वि
पत्ति सुनो मैं आप के पास आता था ता समय राह में देखा तो
कुआ पर एक सिंह राजत है तब मैं डरपा इतने में मोको घेर
लिया मैंने हाथ जोड़े कि राजा पिंगल के पास जाता हूं उस-
ने कहा पिंगल कौन है कि मेरे आगे ठाढो रहे तासे मैं तुझे जा
नेन दूंगा तब मैं विनती कीनी और सोगंद खाई बातें कहि
के आया हूं कि तब आयो आप जानो सोको और यह कहा
तुम्हारा राजा गरीबों का मारने वाला है मेरे पास आवे तो मैं समझूं
यह सुनि सिंह उठि के गर्जो और उस कुएं पर जा ससा से पूछाय-
ह कहां है तब ससा बोला वो कुवा में गया है तू जा देख ये सुनि सिंह
कुवा में झांको जो आपनी प्रति बिंब देखो देखते ही बहुत गर्जना की
और कुआ में कूद पड़ा ससा देख बहुत प्रसन्न भया सब जा-

नवा निर्भय भये तासे ऐसी बुद्धि उपजे तो जावये सुनभावती जा सोरही ॥ **अथ इकतीसवीं कथा प्रारंभ**

फिर इकतीसवें दिन प्रभावती रति को चली शुक से पूछा मैं जाती हूं और काम केलि कर आऊं तब तो शुक बोला गांव का कीसी बुद्धि हो तो जाव वह बोली सो कहो शुक बोला अंग पु र एक नगर है सिंहेश्वर राजा है वह शिव पूजा में अति रढि त है ताके गांव में एक शंकर माली है ताकी स्त्री रंभिका अति सुंदरी है पर पुरुष से भोग करती है एक दिन शंकर माली के पिता को श्राद्ध है तादिन रंभा ने अपना यार नौता बड़े मान सवारे तातें मध्यान्ह के समय वो आया तिनको स्नान करा बैठाये जन के आगे खीर खाड़ धरी सो वे नीके खाय ता समय बनिये के बेटे ने खीर को फूक दीनी सो सबने सुनी और जान यहां सर्प है यह जान जाये माने तब तो शंकर स्त्री से पूछा पिते न हैं पिता की श्राध करैं सो तुम्हारे पुत्रा हते तुम अच्छा श्राध कीनी तासो दक्षीन दिया तासो फिर शंकर भी प्रसन्न भया सो ऐसी बुद्धि होती जाव इतना सुन सोरही ॥

अथ बत्तीसवीं कथा का प्रारंभ

फिर बत्तीसवें दिन प्रभावती रति को चली शुक से पूछा मैं जाती हूं शुक बोला श्रेष्ठ है पंतु गुणदत्त कीसी बुद्धि होती जाव तब बोली कहो तब शुक बोला एक मनोहर नगर है मनोहर दास राजा ताके गांव में गुण दत्त नाम बनिया है सो निर्धन है तेल का व्योपार करता है एक दिन तेल बेचने को धीरपुर में गया तहां सागरदत्त सेठ के घर गया मुजरा किया और बोला हे सेठ हम ने पांच मन तेल है सो लेगा सेठ बोला ले आ यह सुन घर को जाने लगा तब वह सेठ बोला अब देर होगई है आज यहीं रहो यह उसी के घर रहा रात को वह सेठ तो दूकान पर सोया यहां गुण दत्त ने रात में उठ वाके घर गया और इसने ॥ ८ ॥

लगा तब स्त्री कहा अपनी अगूठी मुझे दीतो तुम से भोग करूंत
व इसने मुदरी दी और उस से भोग किया सवेरा भया तब इसने
अपनी अगूठी लेना चाहा और सेठ से जाकर कहा मेरी मुद-
री तुम्हारे घर देखने को मगाई थी सो अब मंगवा दीजाय त-
ब गुणदत्त आदमी को ले घर में गया और साहनी से कह
कर मुदरी दिलवादी फिर मुदरी ले अपने घर आया सोए
सीबुद्धि होतो जाव इतना सुन प्रभावती फिर सोरही ॥

अथ तेंतीसवीं कथा का प्रारंभ

फिर तेंतीसवें दिन प्रभावती रतिको चली तब शुक बोला भ
जा तीतो हो पर माधो दास कीसी बुद्धि होतोजाव तबबोली
कैसी शुक बोला एक ब्रज खंड नामनगर है ताको ब्रजसेन
राजा ता गांव में माधव दास है सो वह बड़ा बंचाल रहै जुआ
खेले एकदिन ब्राह्मण देशांतर को गया एक गांव जा बसा तहां
सुदर्शन बनियां है ता से मिले ब्राह्मण को उसने घर में रखाप
बने नी उसकी चंचल थी सदा आनंद से रहती पर लोभिन ज्यादे
थी तासों जाना कि ब्राह्मण पास द्रव्य बहुत है यासे प्रीत कीजे
तो हाथ आवे यह सोच प्रीत कीनी एकदिन रात को ब्राह्मण
को बुलाया भोग कीनी विचारे ता समय कही कि मुदरी अपनी
मुझे दो यह सुन मुदरी दीनी जब सवेरा भया तब मुदरी मागी यह
विचारा यह न आनेगी साह से कहनो ॥ श्लोक ॥ पाटति का
गमन काल भयार यंतो साटस्मर ज्वर भरति पियास तेव तिर्थ
ति वल्लभजना ध खालो भात स्वास्थ्य तेक विवे रन्न तार
केत १ याते साह से कहनो उचित यह विचार साह से कहा अ-
रे साह तेरी स्त्री मेरी मुदरी नहीं देती मैं राजा सें पुकारूंगा तब
साह बोला कै सीढ़े ब्राह्मण कहा खाट का पाया फटा था उस
में गिर पड़ी तब निकाली सो देखने को मागी सो अब नहीं
देती है तब साह विचारा कि यह राजा से पुकारे तो राजा हम

को दंड करेगा यह विचार अपनी स्त्री से कहा वाकी मुद्री देदे वा को राखना अच्छा नहीं यह कह कर समझाय मुद्री ब्राह्मण को दिल वाई वह ले अपने घर गया सो ऐसी बुद्धि उपजेतो जाव दूतना सुन प्रभावती फिर सो रही ॥ इति ॥ ३३ ॥

अथ चौंतीसवीं कथा का प्रारंभ

फिर चौंतीस वें दिन प्रभावती रति को चली शुक से पूछा मैं जाती हूं तब शुक बोला अब तुम में बनिक लावा कीसी मति होयतो जाव तब बोली कहो तब शुक बोला एक कुंदन पुर नगर है तहां का भीमसेन नाम राजा है मधुर बनिया है उसके द्रव्य बहुत था फिर वह निर्धन हुआ पल्यारा कोई न करै भूखा मरने लगा घरकी सबचीज वस्तु गहने राख दई और परदेश को चलने लगा और गया और कमा कर बहुत सा धन इकट्ठा किया फिर घर को आया और आके सब का देना चुकाया एक पोसिन के घर कुछ लोहे का असबाब रीत गया फिर पोसिन ने आदके कहा कि बतीन तो मूं से लेगए यह सुन चुप होरही एक दिन उसका बेटा दुकान पर जाती था सो दूकान पै बैठार रखवा कोई जाने नहीं तब गांव में डौंड़ी फिरी जो कोई ने सेठ का बेटा देखा होतो बतादयो तब सब ने कहा भूधर से पूछो तब भूधर से पूछा तब बोले लड़के को चील ले गई यह बात कोई माने नहीं तब दर्बार में गया जा के सब बात कही कि पांच वर्ष के बालक को चील कैसे लेगई होगी याको मारो तब भूधर बोला महाराज आज तक कहीं लोहे को मूसा खाते सुना है जो लोहे को मूसा खाता हो तो लड़के को चील ले जाय तब राजा ने कहा लोहे को मूसा न खायगा तो पिछले वृतांत भूधर सब कहा सब झूठा है ये जब कही तब पोसिन ने लोहे का सब असबाब दिया भूधर ने बालक दिया ऐसी मति होतो जाव इतनी बात सुन प्रभावती सो रही ॥ ८ ॥

अथ पैंतीसवीं कथा का प्रारंभ

फिर पैंतीसवें दिन प्रभावती रति को चली तब शुक से पूछा मैं जा
ती हूं शुक बोला अच्छा परंतु बुद्धि की सी बुद्धि होती जाव तब
बोली कहो तब बोला गवन पुण्यवन पास है तहां जावहु।
राजा है ता गांव में दोनी च बसते है एक बुद्धि दूसरो कुबु
द्धि है दोऊ कमाई को चले कुछ दिन बाद बहुत सी द्र-
व्य लेके दोऊ घर को आये तब गांव के नजदीक आये एक
जगह जाके सब द्रव्य गाड़ आये अपने २ घर गए पीछे।
कुबुद्धि ने जाके रात्रि के समय द्रव्य अपने घर ले आया जब
पांच या सात दिन बीते सुबुद्धि बोला है कुबुद्धि अब द्रव्य ले
आवें तब कुबुद्धि ने कहा अच्छी बात है तब दोऊ वहां गये।
जो देखें तो द्रव्य नहीं है तब आपस में लड़ने लगे वा कहे
तूने लीनी है वा कहे तूने लीनी है ऐसे झगरते २ राजा के पास गये
तब राजा ने पूछा तुम्हारे द्रव्य का साक्षी भी है तो कहा वन
देवी सईदार है तब राजा ने कहा कि वो हमसे कहेगी सुबु-
द्धि बोला वन देवी सब के आगे कहेगी तब राजा ने कहा कल
चलेंगे यह सुनि अपने घर आये फिर कुबुद्धि ने अपने बाप
से कहा कि वन में एक वृक्ष है उस में तुम जाय बैठो जब हम
ये कहें वन देवी द्रव्य किसने लीनी है तब तुम कहियो सुबुद्धि ने
लीनी है ये कहो गे तब द्रव्य बचेगा ऐसे कह दूसरे दिन वहां
बाप को बैठा यो इतने में राजा आया और गांव के लोग आये
वा समय राजा पूछा कि वन देवी याको द्रव्य कौने लिया तब ये
सुनि कुबुद्धि का बाप बोला कि सुबुद्धि ने लिया है तब सुबुद्धि
बोला हे महाराज एक घड़ी ऊपर रहो तब कही कि भली
बात है तब सुबुद्धि ने वाके आस पास कांटे की बारि कर आ-
ग लगा दी तब तो कुबुद्धि का बाप पुकारा कि मैं जलता हूं मु
झे निकालो ये राजा सुनि वाको पूछा तब तो कहा कुबुद्धि

ने लीनहै राजा सुन कुबुद्धि को काढ बांधा वाको द्रव्य दिला-
या सो ऐसी बुद्धि होतो जाव यह सुन सोरही ॥=॥

अथ छत्तीसवीं कथा का प्रारंभ

फिर छत्तीस वें दिन प्रभावती रति को चली तब शुक बोला
कि विद्याधर ब्राह्मणा कीसी बुद्धि होतो जाव प्रभावती बोली
सो कैसे तब शुक बोला एक चंपावती नगरी है मर्दन राजा
है ताकी स्त्री सिंगार सुंदरी ताकी बेटी मदन सुंदरी है सो बेटी
राजा को प्यारी है ताके गले में एक फोड़ा भया सो अच्छा नहीं हो
वे तब राजा नगर मेंढोंड़ी फेरी कि जो मेरी बेटी को अच्छी करे
ताको लाख टका दूं तब सुन कर ब्राह्मणी कह उठी मेरा भर्ता
र अच्छा करेगा यह सुन राजा के आदमी उसे पकड़ लेगए
ब्राह्मणा भागने लगा तब वाह गही राजा देख के बोला ये ब्रा-
ह्मणा मेरी बेटी देख के नीकी करे तो लाख टका दूंये कही तब
बेटी को देख ब्राह्मण विचारा बिन कुछ किये छूटे भी नहीं
तब फूठ मूठ का लेप को ऊपर किया वह उसी से नीकी होग
ई तब राजा प्रसन्न हुए लाख टका दिये ब्राह्मणा लेके घर आ-
या सो ऐसी बुद्धि उपजे तो जाव यह सुन प्रभावती सोरही ॥

अथ सैंतीसवीं कथा का प्रारंभ ॥

फिर सैंतीस वें दिन प्रभावती रति को चली तब शुक बोला वा-
मा धारी कीसी बुद्धि होतो जाव तब बोली कहो शुक बोला
स्वस्ति पुर नगर है तहां देव दत्त राजा है ताकी स्त्री अनिरो-
द्रा है ताके दो पुत्र हैं एक ५ वर्ष का दूजा ७ वर्ष का एक दि-
न राजा रानी से लड़ाई भई रानी अपने बेटों को लेके बाहर
चली तो एक उपाय मन में आयो कि दोनों लड़कों को रु-
ला दिया आपु माथो उघार के बोली अरे लड़को क्यों रो
ते हो मैं तुमे एक भ वाघ मार देउं वाको खाव ठाकुरन ने
जा कह आन पहुंचाये सुन चीता वाघ भागे ये रानी आ-

पने घर कों आई तासों ऐसी बुद्धि उपजै तो जाव॥

अथ अड़तीसवीं कथा का आरंभ

फिर अड़तीसवे दिन अभावती रति करने चली तब शुक बोला कि विश्व रजनी कौसी बुद्धि उपजै तो जाव तब बोली कहो तब शुक बोला हंस पुर नाम नगर है ताको राजा सिंगार सुंदर है परंतु नपुंसक था ताकी भार्या रतन सुंदरी है सो वह काम पंडित रहे और बहुत चंचल थी परंतु उस का कुछ चल न सकै क्योंकि राजा के दरवाजे में पांच सौ आदमी बैठे रहते थे एक दिन विश्व रजनी नायन राजा के महल में गई और रतन सुंदरी के पास बैठी जो देखे तो रतन सुंदरी दुखी बैठी है तब यह नायन बैठी बोली कि तुझे ऐसा क्या दुख है तब बोली मेरा पति नपुंसक है तासो दुखी हूं जो तू कोई पुरुष लावे तो मेरा मन प्रसन्न होय सुन के नायन बोली मैं लाऊंगी इतना कह शहर में आई और बहुत तलाश की परंतु कोई कबूल न करे काहे से कि राजा की बहू है न जाने तो मरवाडाले यातें कोई कबूल न करे तब प्रधान का बेटा बोला मोको रतन सुंदरी से मिला देतो तेरा गुण मानूंगा परंतु मेरे घर ल्यावे तो उस का मनोरथ अच्छी तरह पूरा होय यह सुन कर नायन रानी के पास गई रानी से वृतांत कहा तब रानी बोली मैं कैसे जाऊं यहां तो पांच सौ प्यादे बैठे रहते हैं तब नायन कही तू मेरा कपड़ा पहर ले वाके पास तू जा मैं यहां रहूंगी यह सुन नायन के कपड़े पहर मंत्री के बेटे के पास गई वहां रानी को अच्छी तरह से भोग विलास किया ऐसे कितने दिन तांई काम करवाया एक दिन राजा ने रानी को पुकारा यह नायन बोली तब तो कुंवर आया और हाथ पकड़ा देखे तो हाथ भारी है तब जाना ये तो कोई और है इतना विचार कर छुरी काढ़ नाक काटली परंतु यह बोली नहीं कुंवर मनमें विचारा कि संसार कहेगा बुरा किया ये जान वहीं सो रहा तो

नायन अपने घरगई पिऊ वारे पति को पुकारो एक सुरा को कहो उसने फेरा यों रोई मरे तूने ये क्या किया वो दोड़ देखे तो नाक नहीं है घर आई सनी से हाल कहा सनी घर को गई भोरहोसे राजा ने देखा वहा लज्जित हुआ सो ऐसी बुद्धि होतो जाव नहीं तो मत जाव इतनी बात सुन सोरही ॥

अथ उनतालीसवीं कथा का प्रारंभ

फिर उनतालीस वे दिन प्रभावती रति को चली तब शुक बोला कि कनिक सुंदरी की सी बुद्धि होतो जाव तब बोली कैसी तब शुक बोला एक शुभ पुर नगर है सुंदर सिंह राजा रतन से न कुवर ताकी स्त्री कनक सुंदरी प्रधान के बेटे से रति करे एक दिन कुंवर आया देखे स्त्री प्रधान के बेटे से रति कर रही है तो जान्यो याके लक्षण खराब है स्त्री की नाक काट ली नीत बखी किवाड़ देके सोरही ससुर आयो कि किवाड़े खोलो बोली नहीं खोलों मेरी नाक बेकसूर काटी ये कहि सूर्य से विनती करी मेरी नाक अच्छी करो तब अच्छी भई सो ऐसी बुद्धि होतो जाव यह सुन सोरही ॥ ३९ ॥

अथ चालीसवीं कथा का प्रारंभ

फिर चालीस वे दिन प्रभावती रति को चली तब शुक बोला जाव पर चपला ब्राह्मणी की सी मति होय तो जाव तब बोली कहो शुक बोला सर्व पुर नगर है शिवराज राजा है ताकी भार्या शुभ सुंदरी वहां चारो वर्ण सुखी है पर एक पंचनाम ब्राह्मण ताकी स्त्री कनकावती है बेटे बहुत है तीनों आदमी की बुद्धि न्यारी २ है एक दिन एक काम को गयो फिरत रहो तब एक ब्राह्मण मिला धर्मशील नाम है एक गाय नित ब्राह्मण को देता है सो याको ले आए भोजन करायो एक गाय दिया अचरज कियो मन में विचारो पांच बोलो कि तुम्हारे द्रव्य कितना है सो रोज पुन्य कर

ना कर कही जो मोसो रति करै मैं कोई ऐसा मरद न देखा जासों रति करौं तब कृष्ण दास बोला हम करेंगे वेश्या बोली लाख टका देहु तब करने दूंगी कबूल करे और कहा तू हारे तो मैं लूंगा कही अच्छी बात ये कहि रति जब भई रति करने लगी पर चढ़ वेश्या दुखी भई ये कही मैं हारी तू जीता तो छूटा नहीं तब तो अपनी माय को बुलाय कही कि याको लाख टका देदे नहीं तो मेरे प्राण जायगे महतारी बोली अपना यही रोजगार है किये लाभ अलाभ होय सो करो इतने में पहर दिन बीतो तो बहुत कायल भई कृष्ण दास बोले मोको दूना द्रव्य देहु तो छोड़ ऐसे कही तब डोकरी रूप पर चढ़ गई मुरगा कीसी आवाज कही सबेरा भया तब बाहर आया देखे तो एक पहर रात है तब कहा अभी एक पहर बाकी है अपनी बहनको सुला दिया पहर भर वासो भोग किया वेश्या ने कही अपने द्रव्य ले और मेरी द्रव्य ले के पधारो तब उस को और अपनी द्रव्य को ले आयो सो ऐसी होय तो जाव यह सुन सोरही

अथ चौवालीसवीं कथा का प्रारंभ

फिर चौवालीस वें दिन प्रभावती रति को चली शुक से पूछा मैं जाती हूं तब शुक बोला कि विश्वनगर है राजा विजैसेन है तहां हरदास ब्राह्मण बाकी भार्या कमला सो बहु महा कर्कसा के पति कीसी बुद्धि होती आव तब बोली कहो तब शुक बोला ॥ कलह करनी पति को दुख देय वाके घर में पीपल का वृक्ष है तामे एक भूत है सो भूत एक दिन वृक्ष पर से उतर बन को गया वहां एक बड़ है वह रहने लगा एक दिन हर दास की बहू धनी से लड़ाई कीनी हरदास निकस्या बन में गया जा बड़ के नीचे बैठा वह भूत देखे तो हरदास आया है तब नीचे आके बोला कि हरदास आज बड़ा काम कियो जो मेरे पास आया तासों पहला

भोजन करिये यह कह मिठाई दी अरु यह कही तुम हमा-
रे बड़े मित्र हो तुम निर्धन हो पर एक काम करो मृगावती
नगरी है मदन सेन राजा है ताकी बेटी मृग लोचनी है ता-
को मैं लगा हूं सो वाके बाप ने बहुत इलाज कीनो परंतु मैं
नहीं छोड़ा सो वासों नीको द्रव्य दिवायो चाहिये तातें तू
वहां जाव तेरे इलाज से मैं उसे छोड़ जाऊंगा तब हरदा-
स वहां गया देखे तो गांव में डोंडी पिटी है जो राजा की बे-
टी को अच्छी करेगा उसको आधा राज मिलेगा ये सुन के
बोला मैं बेटी को अच्छी करूंगा तब हरदास फकत झाड़ा दि-
या नीकी भई तब हाथ जोड़े जो आप आज्ञा दीजे तो मैं
यहां आऊं तब बहुत भांति आधीनी किया तब भूत प्रस-
न्न भया अपनी बलि मांगी इसने बल दीनी बेटी नीकी भई
तब आधो राज दिया बेटी दीनी भूत बस किया अपना म-
नोरथ सिद्ध किया जो ऐसी बुद्धि होती जाव इतना सुन सो
रही॥ **अथ पैंतालीसवीं कथा का प्रारंभ॥**
फिर पैंतालीसवें दिन सभावती रति को चली शुक से पू-
छा मैं जाती हूं शुक बोला के सो कीसी मति होती जाव
बोली कहो शुक बोला राजा की सब को भूत ने द्रव्य दिला
या ताको अच्छी तरह से भोग किया और के सब के नाम
यह भया कि ऐसे मंत्र वाही को है एक दिन करणावती नगरी
को राजा गमारन जीत ताकी स्त्री सुलोचना को यही भूत ल
गा तब सबों ने कही कि वोही ब्राह्मण आवे नो नीकी होय इत-
ने राजा आदमी को पठाया वह आके केशव को लेगया केशव
देखा सो वही भूत है तब वाके कान में कही कि स्त्री ने मोको बहु-
त दुख दीते हैं ताके डर सों भाज्यो हूं अब तेरी शरण आया हूं सो
तू मेरी रक्षा कर यह सुन भूत बोला तेरी वह सदा कीनी मोको
कहा जाने कहा करेगी तासो मैं जाता हूं मेरा पीछा मत करै॥

वाके ध्रुव की स्त्री को ऐसा डर है तासों भूत जानर है रानी नीको भई राजा प्रसन्न भया बहुत द्रव्य दिया आपने घर गया तासो ऐसी अकल होतो जाव इतना सुन सोरही॥

अथ छियालीसवीं कथा का प्रारंभ

फिर छियालीसवें दिन प्रभावती रति को चली शुक सें पूछा मैं जातीहूं शुक बोला कि सकडाल कीसी बुद्धि होतो जाव बोली कहो शुक बोला एक नंद पुर है राजा मदन कुंवर है सकडाल प्रधान है सो बड़ा धर्मात्मा बुद्धि वंत सत्य वादी नीत मंबहुत प्रवीन है सब को वस किया आपने हुकम से और किसी का डर न राखै तो राजा कहे मोको काढू दिन मार डारेगो तासे याको कैद कीजे यह विचार के कैद किया और मंत्री बैठाया सो का मकरै एक दिन बंगाले के राजा ने इनकी परीक्षा के वास्ते घोड़ी १ पठाई उन का वकील आया आइ राजा से मिला मुजरा करो अर्जे करी सो हमारे महाराज ने २ घोड़ी पठाई हैं यामें बेटी कौन है सो परीक्षा कर देव महीना एक की आज्ञा है नवतो राजा पूछो सब सो मगर कोई न बतावै एक महीना बीत गया तब तो राजा बड़ा संदेह किया कि यह बात न बतावेंग जो वह कहैगा कि राजसभा में अकल नहीं ऐसे बहुत सोच की बात में यह कहा कि सकडाल को लाओ वह बतावेगा और की सामर्थ्य नहीं तब सकडाल बुलाया आया राजा ने बहुत आदर किया बाको सिरो पाव दिया दंड माफ किया और आज्ञा की कि सभा को तो उत्तर न आया तू याकी परीक्षा बता इतनी सुन दोऊ घोड़ी बुलाय खूब दौड़ाई जब पसीनी चल निकला तब ठाढ़ी कीनी ताही समय घोड़ी अपनी बेटी को असमर्थ जान माथा सूघने लगी तब कही यह बेटी यह माता है राजा बहुत खुश भया दोनो सड़ीवे पाले को गई वहां का राजा भी बहुत खुश हुआ इतनी

सुनसोरही॥ अथ सैंतालीस वीं कथा का प्रारंभ
फिर सैंतालीस वें दिन प्रभावती रति को चली शुक से कहा मेजा ती हू शुक बोला सक डाल कीसी बुद्धि होती जाव बो ली कहो शुक बोला एक दिन नंद धर राजा सभा में बैठा था उस के पास वीर पुर के राजा वीर सेन ने एक रंगीन लकड़ी परीक्षा के वास्ते भेजी कि यह अच्छी है या बुरी राजा ने मं-त्रीं को दिखाया पर किसी मे नहीं बनी तब सक डाल को बु-लायो आय राजा को बंदगी कीनी तब राजा दीवान से बोला यह लकड़ी वीर सेन ने परीक्षा को पठाई है सो करो तब म-हतावं बोला तुम्ही कहो तब दीवान बोला इसको पानी में डारो बहते में अच्छी तो डूब जायगी और बुरी है सो बहे गी सो ऐसी बुद्धि होती जाव इतनी सुन सोरही॥

अथ अड़तालीसवीं कथा का प्रारंभ
फिर अड़तालीसवें दिन प्रभावती रति को चली शुक बोला। जो गंगाला बुद्धि कीसी मति होवै तो जाव सो बोली कहो शु-क बोला एक चमत्कार पुर नगर है तहां चिंतामनि राजा है ताके गांव में गंगाला ब्राह्मण है सो ब्राह्मण विदर्भ देश की देवी की या त्रा को गया राह में चोरमिले तिन को देख भा-गे तब इसका गाजा टूट पड़ा इतने में नजीक आदमी देख र हा परंतु छूटा नहीं तो समय गंगाला एक आदमी को पुका-र उसने कहा क्या है गंगाला कहकि चोर है यह सुन कम ठा हाथ में ले बोला कि कितने चोर हैं हजार होंतो दीवान मारूं सो जल्द कहो मैं यह विद्या द्रोण आचार्य से पढ़ी कि एक बान मारूं ये सुन चोर भागे सो घर आया ऐसी मति स-मैं तो जाव यह सुन सोरही॥ इति॥

अथ उनचासवीं कथा का प्रारंभ॥
फिर उनचासवें दिन प्रभावती रति को चली शुक से पूछा

मैं जाती हूं शुक बोला जैसी स्त्री की सी बुद्धि हो तो जाव बोली कैसी शुक बोला सत्य पुर नगर है सत्य सेन राजा है दुर्दमन राजा का पुत्र है ताके ५ यार हैं एक दिन सब ने विचारा कि देशांतर चल के देखें हमारे भाग्य में कुछ है या नहीं ये विचार निकसे दूर पहुंचे विचारा कि कहा उपाय कीजे तब समुद्र के पास गये समुद्र की सेवा करी तब प्रसन्न भया कहा वर मांगो उन्होंने कहा निर्धन हैं ऐसी कृपा कीजे हम धनमान हों समुद्र सुनके हजार मणिक दिये सो अमोल कृपा कर दिये चारों ने बांट लिये तब वहां से आज्ञा मांगी घर को चले राह में विचार करने लगे कि जो कोई मिलेगा तो कहा करेंगे यह सोचा कि बनिये को सौंप दीजे इतना कह बोला ऐसी बुद्धि हो तो जाव इतना सुन सो रही ॥ अथ पचासवीं कथा का प्रारंभ

फिर पचासवें दिन प्रभावती रति को चली शुक बोला राजा के बेटे को प्रधान ने उत्तर दिया ऐसी अकल हो तो जाव बोली कैसे शुक बोला दलावती नगरी जालंधर राजा है सुशील प्रधान है वाको बेटा बुद्धिवंत है सुशर्मा वाको नाम है वो राजा के मन माने नहीं प्रधान ने अर्ज की मेरा पुत्र बड़ा प्रवीण है तासों याकी परीक्षा कीजिये एक डिब्बे में रांडी भर के प्रधान के बेटे को दिया और कही दमनक देश जाव तो मदन सेन राजा के पास जाय के देहु वाको जवाब लाओ प्रधान का बेटा सलाम कर चला गया राजा को सलाम कर डिब्बा दिया राजा ने डिब्बा खोल कर देखा तो रांडी देखते ही बहुत क्रोध किया कहा ये रांडी हम को क्यों पठई है हम से ठट्ठा किया है तो प्रधान का बेटा हाथ जोड़ कर बोला महाराज परीक्षा आप की बताय पठाई है राजा यत्न किये नें सो आप को पठाई है ये सुन बहुत प्रसन्न भया सिरोपाव दिया बहुत कुछ नजर किया और हाथ जोड़ के यह क-

ही मुझपर बड़ी कृपा की ये कहि विदा किया प्रधान कावे-
दा राजा पास आया सलाम किया हाल कही राजा बहुत खु-
शी भया सो ऐसी बुद्धि होती जाव इतना सुन सोरही॥

अथ इक्यावनवीं कथा का प्रारंभ

फिर इक्यावनवें दिन प्रभावती रति को चली शुकबो-
ला श्री धर ब्राह्मण की सी अकल होवे तो जाव बोली कैसी
शुकबोला वर मुकट नगर है तहां चिंतामणि राजा है ता गांव मे
श्री धर ब्राह्मण है तहां एक चंदन मोची वस्ता है तासों श्री
धर ने अपनी जूती बनवाई यह कही मैं तुमें खुशी करूंगा
ये सुन जूता बनाया ब्राह्मण अधेली दीनी तब खुश न भया
तो चौहटे में आ के पुकारा कि चमार राजा के पुत्र हुआ है
तू खुशी है या नहीं तब विचारा नहीं से मारा जाऊंगा या
सों कहा खुशी हूं ब्राह्मण बोला मैं तोको खुशी किया सो ये
सी बुद्धि होती जाव इतना सुन सोरही॥ ८॥

अथ बावनवीं कथा का प्रारंभ

फिर बावनवें दिन प्रभावती रति को चली शुकबोला ध-
र्म दास की सी मति उपजे तो जाव बोली कैसी तब शुकबो-
ला एक चक्रधीर नगर है तहां मनोहर राजा है ताको मान
सिंह प्रधान है ताके गांव में एक सील नाम ब्राह्मण है सो
महाधनवंत है ताको धर्म दास एक गुमास्ता है सो वो नि-
त्य उगाही कर रुपया ले चला ताही वक्त चार चोर राह में
मिले देख मन में विचारा ये चोर हैं मैं अकेला हूं धन कुड़ाय
लेंगे विचारो कहा करो ताही समय जक्ष स्थान देखा तहां
जाय द्रव्य धर दिया और कही महाराज ये द्रव्य लाया हूं फिर
वा आऊंगा फिरतो चाहे कहो तो चोर जानो ये यक्ष की द्रव्य है
वासों भय मान वाकी द्रव्य नहीं लिया उठि गए बनियां द्र-
व्य ले अपने घर आयो इतना सुन सोरही॥ ९॥

अथ त्रेपनवीं कथा का प्रारंभ ॥

फिर त्रेपन वें दिन प्रभावती रति को चली शुकवोला सुभकर कीसी मति होय तो जाव वोली कैसी शुकवोला धारानगरी भोज राजा है सुमती नाम प्रधान बड़ा गुणवान एक दिन भो ज राजा की रानी चंद्रलेखा जो बड़ी चंचल है ताको मन पंडि त सो लटको सुभकर भी अति सुंदर था सो येभी आसक भया तब एक दिन रानी रति के समय आपही ऊठ पंडित के घ र ई भोग करो ऐसे बहुत दिन बीते एक दिन रति को रानी चली तो समय नष्ट चाणी को राजा हू निकला आगें २ रानी पीछे २ राजा या भांति चले गये तब पंडित यार हुो रानी भीतर गई भोग करो राजा घर आया पलंग पै सोरहो कितनीदेर बाद रानी आई पलंग पर सोरही सवेरा हुआ राजा सभा कीनी १ पहर पीछे सबन को सीख दीनी और उस पंडित को राखा और रानी भी बुलाई कथा वार्ता अनेक कही ब्राह्मण प्र सन्न भया तब रात की बात पूछी पंडित रात को कौनसी बात कीनी सांसों सांची कहो तब पंडित मन में जानी कि ये जान चुको और रानी भी जानी कि राजा वह बात जानग या पंडित ने विचार के एक श्लोक कहा॥ श्लोक॥ उग्र ग्रह मुदन्वतो जल मति काप्य वाल्लंघ नि काम नीड़ित दुगे मिथति मता प्रा भार मोरो हृतव्य नि यांति निशेषरो रह कुले पा मालि कामिनी कीर्तिस्ते मदनाभि राम रुतकंग नोत पषो पिते १ यह श्लोक सुन राजा संतुष्ट हुआ पीछे म न में विचारा ऐसा पंडित फिर मिलना नहीं और स्त्री तो बहुत मिलें भी तासो याको दीजे तब बहुत धन दिया और स्त्री दी मन में संतोष भया ऐसो मति हो तो जाव इत नासुन सोरही॥ **अथ चौवनवीं कथा का प्रारंभ**

फिर चौवन वें दिन प्रभावती रति को चली कहो तो हूं॥

शुक बोला कि दुर्गीला की सी मति होवे तो जाव बोली कहो शुक बोला लोहपुर नगर है लोकपाल राजा है ताको भीम सेन मंत्री है ताकी दुर्गीला भार्या जो महा गरीब है वाके ४ लगायन सोवे सब सूत बेचने को पद्मावत नगरा को चली ता राह में २ गणेश जी का मंदिर है वहां ये चारो जाय दंडवत किया एक बोली जो मेरे सूत में मोको द्रव्य मिलेगी तो तेरा भाग धरूंगी दूसरी बोली मैं आपको धूप दीप करोंगी ३ बोली मैं भेट करोंगी ४ बोली मैं नग्न होकर आप सों आलिंगन करोंगी ऐसे कहि पद्मावती नगरी गई सूत बेचा सबको नफा भई ये सही संग सब चलीं फिर गणेश जी के पास आई अपनी २ कही कीनी और दुर्गीला नग्न होकर सामने आ गणेश जी से लिपट गई और चूमा लियो तो गणेश जी के काम जागा आलिंगन किया मुख चूमा और मुख में लिया फिर छोड़े नहीं वे स्त्री घर गई दुर्गीला के पति सों कही तेरी स्त्री को गणेश जी के मुख में है छोड़ते नहीं तो यह दौड़ा देखे तो सच है वो स्त्री की जोन और वो नग्न होके स्त्री संग करन लगे इतने में गणेश जी हंसे और छूट गया स्त्री पुरुष अपने घर आये ऐसी बुद्धि होती जाव प्रभावती सुन कह सो कही ॥

अथ पचपनवीं कथा का प्रारंभ

फिर पचपनवें दिन प्रभावती रति को चली शुक से पूछा मैं जावं शुक बोला रुक्मिणी की सी मति होतो जाव बोली कहो शुक बोला धन पुर नगर है वहां धनेश्वर राजा है धनपाल प्रधान है और एक राजा का कुंवर कुंवरसेन बड़ा धन धारी है और परम वेदी है वह अपनी स्त्री रुक्मिनी समेत तीर्थ यात्रा को गया एक दिन राह में महा सुंदर देखो स्त्री की नजर वेदी पर जा तब स्त्री का मन चलाय मान भया ये जानी और विचारा याको ले जायंगे तो धर्म साधन न होगा तासों अपने घर आया यात्रा को नहीं गया परंतु स्त्री को बहुत लाड़ लाकाता है ए

कदिन रात्रको स्त्री को बांधा तब स्त्री बोली मन में आज याके आगे पुरुषसे रति करो जो मेरा नाम है आधी रात गई तो पति सों बोली कि सुनना हूं मैं स्त्री हों धर्म कछू या समय करना चाहिये सो तू मोको छोड़ै तो नीकी बात है सो पति ने छोड़ी वाहर ले गया तो समय एक यार आया झांक के नीचे सोरही फिर वाके पास गई तो वहांसे बोली तुम वाणा अच्छे चलाते हो यह सुनी है तासों आज पीपामें एक छेद है वामें होकर पार जावे तब सांच जानो इतना सुन पांच सात बोण फेंके पीछे देखने गया वहांवड़ी देर ताईं यार सों काम कराय लीनो विदा करी अपनी मुद्री दीनी इतने में पति आया कि देखन यार सों रति बोली तू मेरा तन मांस देखा यार सों रति कीनी तो भी पति को सांच नहीं आया मुद्री दिखाई तब पति बहुत समझाया इतना कही कि स्त्री का चरित्र कोई जानता नहीं सोप्रभावती ऐसी बुद्धि हो तो जाव इतनी बात सुन सोरही ॥ इति ॥५५॥ =५॥

अथ छप्पनवीं कथा का प्रारंभ

फिर छप्पन वें दिन प्रभावती रति को चली शुक से बोली मैं जाती हूं शुक बोला मानिक देवी कीसी बुद्धि होती जाव बोली कैसी तब बोला जयस्थल नगर सोधर राजा जय चेत प्रधान है ताके गांव में वेसाष नामा कुनबी है ताकी भार्या मानिक देवी सो गरीब है ताको सूरपाल यार सों नित्य रति करै है एक दिन खेत को चली मानो लेकर राह में यार मिला वासें रति कीनी यह पहले भी हो गई है ॥ ८॥

अथ सत्तावनवीं कथा का प्रारंभ

फिर सत्तावन वें दिन प्रभावती रति को चली शुक से पूछा मैं जाती हूं शुक बोला रत्न देवी कीसी बुद्धि होती जाव बोली कैसी शुक बोला शंख पुर नगर है तहां संख चूड़ राजा है ताके गांव में एक बनिया है ताकी बहू रत्न देवी है सा

एक दिन अपने यार सों कही कि मेरी विद्या देख जो पति के संग सोवत है और यार सों काम करूं एक दिन पति को प्रीतम के संग सोवत रही और यार आया उसेभी एक ओर सुलाया फि र यार को सुख कर काम कर्‌यो जब काम पूरा हो चुका योनि मे सें निकाला तासमय वाके पति की पीठ सो इंद्री लगी तो स्त्री पुकारी कि चोर है इतने में पति के हाथमें लिंग यार को आया तब खैंचि के पकर स्त्री से कहा कि तू याको पकरे तोमें दीवा कर ल्याऊं येकहि स्त्री के हाथमें पकर्‌यो दीवा को गया ताही स मय यार को छोड़ जब पति दीवा ले आया देखे पड़ा की पकड़ लिया है तब हंसकर बोली कि पति ढिग सों जो ऐसे काहू को लिंग पकड़ बाते डोलें तो क्या है घर घर चोर फिरते हैं पति मितस्याना हुआ ऐसी बुद्धि होती जाव इतनी बात सुन प्रभावती सोरही ॥ इति ॥ ५७ ॥ ८

अथ अट्ठावनवीं कथा का प्रारंभ

फिर अट्ठावन वें दिन प्रभावती रति को चली बोली मैं जाती हूं शुकबोला शंभू ब्राह्मण की सी मति होइ तो जाव बोली कहो शुकबोला सिद्ध चूड़ नाम नगर शिव भक्त राजा सुंदर नाम प्रधान है तामें शंभु नाम ब्राह्मण है सो एक समय तीर्थ यात्रा को चले राह में एक स्त्री सुंदर मिली पर युवा भी थी चार नजरें भई तब तो दोनों को काम व्यापा ब्राह्मण बोला आवो भोग करें वह बोली बिन लिये न करूंगी तब इसने अपने गले की कंठी दी और भोग किया काम करके फिर कंठी मांगी उसने कहा मैंने अपना शरीर बेंच के दीनी है मैं न दूंगी तब दोनों में झगड़ा पड़ा तब विप्र ने दया वान कर्‌यो वाके खत में से सिराय तोड़ के भाग वह पुकारी ब्राह्मण मेरा खत लूट लिये जाता है आगे शंभु पूछे वह भाग ते चले २ गांव में आए तब गांव का चौधरी बोला कि क्या है शंभु ने कहा मैं तीन

दिनका भूखा हूं सो आपने हाथ सिराय तोड़ तब मेरी सोनेकी कंठी दसन उनार ली है सो मेरी दिलाय दो वहां उस का पिता बैठा था सो बेटी से कंठी दिला दी ऐसी होतो जाव फिर सोरही॥

अथ उनसठवीं कथा का प्रारंभ

फिर उनसठवें दिन प्रभावती रति को चली बोली शुक मैं जाती हूं शुक बोला सजपानी स्त्री की भांति होतो जाव बोली कैसी शुक बोला जलंधर पुर नाम नगर है जोग सेन राजा जनार्धन महते उस में देवी दास बनिक था ताकी भार्या सजपानी बड़ी चिनार है वाको देदो यार है उसे बड़ी प्यारी है यह बात पति जाने कि स्त्री दुष्ट है सो परीक्षा कीजे कहीं मैं गाव हो आऊं ऐसे कहि कूप रहा रात भई जब देदो आया भोग किया इतने में पति आया तब या से बोली तू मोसों लड़ और यह कहि कि उवा पति को दान या ही बेर देहु ऐसे कहा बहुत गारी दे इतने में धनी को देख शोर किया और कही रांड मोको भई सो दे तब बोली रे गारी काहे को देता है मेरा धनी आवगा तब लीजो ऐसी कहि बाको काढ़ि इतने में धनी आया देख बहुत खुश भया सो ऐसी बुद्धि होतो जाव इतना सुन सोरही॥

अथ साठिवीं कथा का प्रारंभ॥

फिर साठिवें दिन प्रभावती रति को चलते वक्त शुक से पूछा मैं जाती हूं शुक बोला श्यामवती कैसी बुद्धि होतो जाव बोली कहो शुक बोला संभल पुर नगर है हरजस राजा नरपति प्रधान है तहां एक कुंभ करन रजपूत है ताकी स्त्री श्यामा है एक दिन कुंभ करन कहीं गया घर में स्त्री के पास रमरंगी लौंड़ी को कर गया जब संध्या भई तब रमरंगी से बोली कि तू एक कठोरा द्रव्य भरकर लेजा कोई उत्तम पुरुष को लेजा तब दासी गई और ले आई सो ऐसी बुद्धि उपजे तो जाव यह सुन सोरही॥

अथ इकसठिवीं कथा का प्रारंभ

फिर इकसठिवें दिन प्रभावती रति को चली शुक बोला कुस

मावती कीसी बुद्धि होतो जाव बोली कैसी शुक बोला चंपाव
ती नगरी ईश्वर दास राजा है अचल दास कुंवर धुंद नाम प्रधान
के गांव में विरम बनिया ताकी बेटी कुस मावती है परणीत तमको
व्याही थी एक समय वह पर देश गया आए वर्ष रहा द्रव्य क
माया यहां कुसमावती १० दिन शील प्रति पाला पीछे नि
संक हो जो मन में आया सो किया एक दिन ममोला दासी
से बोली मोको काम व्यापा है सो एक पुरुष ले आ तब ममोला
बोली मुस्सा न होवे तो कहूं तब बोली कहो तब कहा एक गां
व में कामावती वेश्या रहती है वाके यारका व्यापार है इसे तुम व
हां जावो तो अच्छे से अच्छा पुरुष मिलेगा सो बोली आज तमा
सा देखिये मनमें कही अच्छी बात है ये सुन मुंदर ले वेश्याके
घर जा बैठी तब वेश्या के घर यही सेठ आया सोए इधर इसने
कुसमावती को बुलाया सो आई तब वेश्या ने सेठ के पास कर
दीये देखे तो अपना पति है तब स्त्री बोली कि सेठ तू ऐसा काम
करै मैंने तेरे पीछे आज लग किसी का मुख भी नहीं देखा तुम
पर स्त्री पर आशक्त हो अभी सुनी कि सेठ वेश्या के घर आ-
एहै वासों मैंने ताको देखा अब भी तो घर चलो तब सेठ खिस
नो पड़ोसो ऐसी बुद्धि होतो जाव सुन सोरठी ॥ ३॥

अथ बासठवीं कथा का प्रारंभ

फिर धारि वे दिन अभावती रति को चली तब शुक बोला रा
जा जैसे सिव का दुख भाज्यो तैसी बुद्धि आवे तो जाव तब बोली
कैसी सो कहो तब शुक बोला एक सिर्जा पुर नगर है मन रंजन
राजा मनोहर कुंवर कर्म सेन प्रधान है तामे एक श्री पाल से
ठ है वाको बेटा वीर पाल बड़ा प्रवीण है ताकी स्त्री मदन रे
जनी अति रूपवंत है परंतु पर पुरुष भोगनी है एक बनिये से
सदा रति करै एक दिन श्री पालने मरत्यु पायो ताको बेटा एक
वनैनी से रति करै एक दिन श्री पाल का बेटा जेठ के म

हीने सें शिकारको गया सो वन में जाय साथी विछुर गए भूख प्यास से दुखी भया तब एक वनियो मिला वाने चबैना दिया तब खाया पानी पिया तब वनियें ने राजा से कहा कि कोई २ बात कहो राजा ने कहा चार बात कहेंगे अगर चार सौ रूपया देवे तब वनियें ने चार सौ रूपये दिये तब कही गह में अकेले न चलिये और बहुत कहे सो कीजे और स्त्री सों दिल की गुप्त बातों का भेद न देय और तीसे दुख परेतो मेरे पास आइयो ये चार बात कही तब अपने २ घर गए वनिया विचारा कि अब अकेले न चलिये तिस से एक सहेली मिलो सो साथ लियो वहां से आगे गये एक वड़ के नीचे जाय बैठो तहां एक सर्प निकसो काटने आया तब ही सर्प को मारो इतने में वनियो जगा देख कहने लगा ये रूपयों की बुद्धि काम आई ॥

अथ त्रेसठवीं कथा का प्रारंभ

फिर त्रेसठवें दिन अभावती रति को चली शुक बोला वीर राजा गांव में गया वहां के लोग ५ मिले और यह कही कि परदेशी एक कहना हमारा मानिये मर गया है इसे बहाय आवो तब वनियो सोचा पंच कहें सो कीजे तब वाको बांधि पानी में बहाय आयो वाके गांव में वा मृतक कस्क की कमर में मुहर की वसनी थी सो खोल अपने बांधि लीनी सांझ को गांव में आया पंचो ने कहा कि परदेशी हमारा कहना माना है सो कछू दीजै फिर २ घर और १००) रूपये दिये तहां वीरराजा आयो आध सोए आधी रात भई तब शब्द भया के पड़ो २ यह सुनो तो वीर राजा बोला कि पड़ भाई पड़ली वैठो होयगो सो सही इतने में एक सुवर्ण का पुरुष गिरा तब तो उठाय लीनो कांधरा में धर राखो तड़के उठ अपने घर की राह ली ऐसी बुद्धि उपजे तो जावे इतना सुन सो रही ॥

अथ चौसठवीं कथा का प्रारंभ

फिर चौंसठ वें दिन प्रभावती रति को चली वोली हे शुक मैं जाती हूं
पाई सेज पर सोने को शुक वोला अच्छा परंतु एक कथा सुन नि
यांतीसरी बुद्धि भूला सो सुन वाली कहो तोता वोला वीर राजा सो
ने को पुरुष ले आया भाग दरवा सोह किया सब बात पूछे सो बनि
ये ने कही राजा की बात भूल गया इतने में एक कासद आया
आवाज दीनी तुमारे वे लजो हं० आये पहुंचे वह कासद बहुत
वार ताई वात की नी इतने में वीर राजा पूछा जो आप बरद आ
ई है कासद वोला ककड़ी के बीज हैं तुरंत वोए पर उपजे नहीं
तुरत सेठ के मन में आई तुरंत वोए पहर में उपजे वायो प्रसन्न
भये अपनी स्त्री को बुला तमासा दिखाया स्त्री वोली कि यह दो
नों ऐसी देवें सो कभी सुनी नहीं इतने में स्त्री को यार आया वा
में कही कि मेरा माल के आठ वैल आए है और एक बीज को टि
को आयो है सो तुरंत वोए तुरंत उपजे तुरंत खाव वाको तमासे
देखो ककड़ी खिलाई श्री वंत प्रसन्न भया और यह कही जो अ
व तुम सों मिलाप रहो जो तूमेरे घर आवे तो मिलाप सही नहीं
तो नहीं तब तो स्त्री वोली जो कोई उपाय करो आऊं तो तब श्री
वंत वोले जो बीज तेरे है सुत बीज को कोव राव जब सवारी भई
तब वीर राजा कपड़ा पहरा राजा को भेट ले गया और साह वैल
को हार मेल होगया और श्री वंस आगे जा बैठा तही समय से
ठ जाय सलामी की राजा बहुत मदत दिया बात पूछी भेट ली
नी और बोले कि सेठ अपूर्व वस्तु कछु आई हो तो दिखाओ
तब वीर राजा बीज ले उस के आगे रक्खा और कहा कि तुरंत
वोओ तुरंत उपजे ऐसी वस्तु है तब राजा बोला कि अब साई
जो जानो नहीं कहा जाने ये कूड़ है या साच तब श्री वंस बोला
पहले करतो देखो इतना वीर राजा सुनी की कहो जो तू कहै
सो कबूल है तब श्री वंस बोला कि यह बीज उपजै तो मैं या
के घर का धनी न उपजै तो यह मेरे घर का धनी ऐसो है दु वां

धी जव वोए उपजे नहीं तव श्री वंत जीता वीर राजा हारे व
हुत खिसया नो भया घर आया विचार कि अव वहुत दुख
पड़ा ऐसा विचार घर आयो विचार कि पहर रात गये राजा
से मिलूं गोष्ठि भई अरु राजा पकरे जो ताको वहुत भीड़
पड़ी तासो आयो तव सेठ वोला महाराज आप की दो वात दे
खी तामें लाभ भई और एक वात में चूका ताको यह फल हे य
ह राजा सुनी घोड़े के ऊपर सवार हो याके आया आके देखो
कि भार्या के प्यार में यह कहत है कि मैं तो ले चला जाऊंगा
से कहि घर ले गया स वारे भयो तो लोग तमासे आयो सेठ
को मिलव वहू की श्रीमंत जीता है सो ले आवेगा इतने में वीर राजा
आया ऐसा तव वोला कि मेरी कही नहीं मानी सो यह फल पाया
वह कह श्री मंत की नाक काटी शहर से निकालदिया सेठ का
और व्याह कीनो ये सुन सोरठी ॥

ग्रथ पैंसठिवीं कथा का प्रारम्भ

अव रात्रि भई प्रभावती चली शुक से पूछा शुक वोला जाओ
परन्तु किसान स्त्री कीसी सुद्धि उपजे तो जाव प्रभावती ने कहा
वह कथा किस प्रकार पर है शुक वोला कि एक गंवार
की स्त्री कोठे पर बैठी थी एक जवान उसको देख कर आ
शक्त हुआ उस स्त्री को भी विदित हुआ कि यह मुझ
पर मोहित है उस को सैन से बुलवाय कहा कि अ
ई रात्रि को उस वृक्ष के नीचे आकर बैठ रहना मैं अ
पने पति को सुला कर तेरे निकट आऊंगी जव अर्द्ध
रात्रि व्यतीत हुई वह जवान उसी रूख के नीचे आय बैठ
रहा वह स्त्री अपने भर्तार को सोता छोड़ आई और उस के
साथ सोरठी - संयोग वस उस स्त्री का स्वसुर उसी समय कि
सी कार्य के वास्ते उठा और बाहर जाने लगा तो क्या दे
खता है कि उस के पुत्र की स्त्री पर पुरुष के ॥

साथ सोती है इसबात से वह दुख को प्राप्त भया और उस के
पाव से कड़ा उतार अपने निकट रक्खा और जीमें कहने
लगा कि इस दुष्टा को बहुत दण्ड दूंगा एक घड़ी के पे-
श्चात जो उस स्त्री की आंख खुली तो क्या देख ती है कि
पाव में कड़ा नहीं उसने अपनी बुद्धि से यह जाना कि
यह बात ससुर ने देखी होगी और कड़ा उतार लेगया
न जानिये क्या हो यह सोच अपने प्यारे से कहा तुम
अपने घर जाओ जिस दिन जी चाहे आइयो यह क
हउसे विदा किया आप अपने पति के समीप जाय
लेट रही थोड़ी देर के पीछे कहने लगी यहां तो गरमी
लगती है निदान अपने भर्तार को उसी वृक्ष के नीचे
ले आई दोनो मिल कर सोरहे जब उसके पति
की आंख लगी तब उसे जगा कर कहने लगी
जी सोवे क्या हो उठो तब तो वह उठ बैठा और क
हने लगी जैसा तुम्हारा पिता वैसा मेरा पिता यह क्या
कि मेरे पांव का कड़ा उतार लेगया मुझे नग्न खुला देख
या उसने कहा कि भोर को मैं उसे समझा दूंगा जब भोर
भया अपने पिता को झुकलाय कहने लगा कि हे पित
तुम को उचित नहीं जहां बहू बेटा साथ सोते हों वहां
जाओ और उन को देखो तब उसने कहा बेटा बुद्धि
मान बन तेरी दुष्ट स्त्री पर पुरुष के संग सोती थी मैं
ने अपनी आंखों से देखा है और यह कड़ा मैंने उतार
है इतना सुन तेही वह अधिक क्रोधित हो कहने लगा कि
मम मेरी स्त्री के आपही आप वैरी होगए मुझे अच्छे प्रकार वि
दित है कि गरमी के कारण मैं उस वृक्ष के नीचे उसके साथ से
ता था यह सुन उसका पिता लज्जित हुआ यह सुन सोरही ॥

अथ बहत्तरवीं कथा प्रारम्भः

फिर छासठिवें दिन प्रभावती रति को चली शुक से पूछा मैं जा
ती हूं तब शुक बोला कि सिद्ध रोह कैसो अकल होवे तो जाव को
ली कही तब शुक बोला चंद्रावती नगरी सत्य व्रत राजा ताके दो
प्रधान एक सिद्ध रोह दूसरा सिद्ध वर्धान एक दिन दोनो से वि
गरी तब वे सिद्ध राजा के पास गये वाने बहुत आदर किया बहुत
दिन रहे एक दिन धर्म दत्त बड़ो राजा सो फौज ले सिंधु राजा
वे चढ़ि आयो मुल्क में बड़ा उपद्रव मचाया सिंधु राजा बहु
त विनय किया परंतु मानै नहीं तब होऊ प्रधान भेजे सो रा
जा सों मिले बहुत बतलाये पर एको बात मन में नहीं ल्यावै
औरय ह कहा कि अपनी बेटी देव औ लक्ष मुहर देतो जाव
नहीं सो याको मारेंये सुन प्रधान बोले हे महाराज यह तो आ
सान है युद्ध दोनो का बुरा है सो ये अच्छी नहीं तासों आप पधा
रो हुवन मानो और राजा के द्रव्य को ठार में न हीं कहते क्योंकि
दाता बड़ा है जो आवे सो पुन्य करत है जो आप की इच्छा है
तो आपु पुन्य लेव तब राजा ने कहा ये अच्छी बात है तब वेदो
लाख रूपये लेके हाथ में दिया याने जो हमारे राजा का पुन्य तु
मको है यह सुन राजा प्रसन्न भया अपने कटक ले घर गया प्र
धान यहां अपने राजा के पास आये कही इतने पहले प्रधा
न राजा सों कि इनने बुरी करी जो आप को धर्म दे आए दूत
ना सुन राजा बहुत क्रोध किया तब होऊ बोले महाराज ऐसे
द्रव्य जाय तो कुल द्रव्य दीजे हम वा राजा का पुरा बुलाद देंदू
तासों एतनाही जब ऐसा कहा तब तो राजा राजी हुए सो हे
प्रभावती ऐसी बुद्धि तुम में होवे तो जाव इतनी बात सुन प्र
भावती फिर सो रही ॥ दूहा ॥ ८ ॥ ६६ ॥

अथ सड़सठिवीं कथा का प्रारंभ

फिर सड़सठ वें दिन प्रभावती रति को चली तब तो
शुक से पूछा मैं जाती हूं तब शुक बोला अच्छी बात है परंतु

जारी वे जारी करि आवे तो जाव तव प्रभावती बोली मैं तो जान
ती भी नहीं तव शुक बोला सुंदर पुर एक नगर है तेज वंत राजा
श्री वंत वाको कुवर जै पाल प्रधान है सो श्री वंत कुवर की ए-
क नाई सो यारी थी जव ये प्रगट भई तव सवने कहा यह वा-
त अच्छी नहीं पर माने नहीं यह फिर देश से निकलो और स-
गनाई को लिया तव माता ने चार लड्डु भरे हुए रतनों से धरि
दिये मार्ग में भूख लगी तव दो लड्डु आप लिये और दो लड्डु
यार को दिया जव तोड़े तो रतन निकले तव कुवर राजा के ने या-
रसे पूछा तेरे रतन कैसे तो कही के कोई नहीं कुवर जाना यार
झूठ कहता है कही जो मिला है सो कहो नाई सोच के बोला
भलो सो बुरो भली तो एक डोकरी मिली सो खाना दो नत मि-
ली सो नाई कैसे बोलत है कुवर बोला सांचो सांचो झूठो झूठो
झूठो वेटा को पालि के किया सो वेटा वाकी आज्ञा में चलने लगा
घोड़ा पर चढ़त है और हजारन की द्रव्य है सो मैं कहा कहों
तुम देखते हो सो अस झूठा सो सांचो इतने में नाई बोला जो
तो हारो मैं जीतो तासे होउ देव इतना कहि कुंए से आंखें
काढ़ि लीनी सव लेके चला गया पाछे कुवर वहुत दुखी हो
के वृक्ष के नीचे आवेठा फिर नाई एक राजा के देश को गया
वहां रत्न भुनाये और खाने लगा कुवर वड़के नीचे पड़ो वाके
नीचे सारस पक्षी और सुवा था तहां कुंवर को रत भई तव
तो रोने लगा तव जानवर आपस में बोले जो यह हमारी वी-
ट आंखिन में लगावे तो नीकी हो जायं फिर आपस में पूछी
कुछ और भी गुन है तव कहा अठारह कोढ़ होवे भी नीके हो
जायंगे ये सुन सवेरे वीठ वटोर कर कपड़े में वांध ली और
आंख में लगाया आंख अच्छी होगई तव वहां से चल कर व-
हां आया जहां नाई था और वहां का राजा कोढ़ी था तव दूस-
ने कहा अगर मेरा कोढ़ कोई नीका करे तो आधा राज और

बेटी उस को दूं यह बात सुन ये बोला कि मेरी दवाई लगा तो अच्छा होउं ये बात सुन राजा ने बुलाया यानें औषध ले लगाई राजा चंगा होगया तब नादी बेटी की उसी के साथ कर दी और आधा राज भी दे दिया एक दिन कुवर बजार को निकले तब कुवर को यारने देखा तो विचारा कि ये मोको देखे तो मार डालेगा तासों वाको मारिये ये विचार सबेरे ही गांव में बड़ा रई कि ये मेरे नाई का बेटा है गांव में सोर भया नाई का बेटा राजा का दामाद भया है ये बात श्री चंद राजा ने सुन नाई को बुलाया और ये विचारा कि अपराध लगा वास यह जमाई मरा भला तब चंडाल बुलाये और कहा कि तुम गांव के बाहर तौला गरम कीयो और जो कोई तुमें पूछे उसे ही डाल दीजो इतने में जमाई आया राजा को मुजरा किया और अर्ज की मो लायक काम हो सो फर्माइये राजा बोला बाहर बाहर देख आओ कहा होता है यह सुन स्त्री के पास आया कि राजा यह कही है स्त्री बोली आज शनि वार है सो न्हाइके जाइयो जब तक पूजा करी देर भई इतने में और एक सेर का जमाई जो निकला उसने पूछा ये कहा है तब उसको पकड़ कढाव में डाल दिया या पीछे राजो का जमाई गया देखे तो यह भयो है तब तो आय राजा से कही राजा ने कहा आप कौन हो वह बोला मैं जैमंत राजा का बेटा हूं तब तो राजा प्रसन्न भया और नाई को सूली दी सो ऐसी बुद्धि हो तो जाव ॥

अथ अड़सठिवीं कथा का प्रारंभ

फिर अड़सठिवें दिन प्रभावती पर पुरुष से रति को चलीथु क से पूछा कि मैं जाती हूं शुक बोला अच्छा जाव परंतु मेडुक और भौंरे ने आपस में मिलके एक हाथी को मार डाला था यदि वह हाथी बहुत बड़ा और बलवान था जो ऐसी बुद्धि आवे तो जाव प्रभावती ने कहा वह कैसी कथा है शुक कहने लगा कि

एक नगर में एक वृक्ष अति सघन था उस पर एक पक्षी के जो
ड़े ने घोंसला बनाय अंडे दिये थे संयोग वस एक मत्तमतंग
उस स्थान पर आ पहुंचा और उसी वृक्ष से अपनी पीठ रगड़ने
लगा कि जिस से वृक्ष हिलने लगा और अंडे गिर पड़े सो वह प
क्षी भय भीत होकर अपनी स्त्री को छोड़ अन्यवृक्ष पर जा बैठा
और हाहा कर रुदन करने लगा जैसे कि यह दृष्टान्त ख्यात है
रविल्ली के सन्मुख चूहे का क्या वश चले) परंतु अपने जी में क
हता था कि इस बड़े वैरी से किस प्रकार बदला लीजिये यह
सोच अपने मित्र लम्बी चोंच वाले पक्षी के निकट जाय सब
समाचार कहा कि इस हाथी ने मेरे ऊपर व्यर्थ अन्याय कि
या है कोई ऐसा उपाय विचारो कि यह मारा जावे मैं गुरु से
इसवास्ते कहता हूं कि तू मेरा परम मित्र है और समय पर मि
त्र ही काम आता है उसने कहा कि हे भाई हाथी का मारना व
ड़ा कठिन है गुरु अकेले से न हो सकेगा परंतु एक भौंरा मेरा
परम मित्र है और अति बुद्धिमान है उस से इस विषय में बा
तो करूंगा वह जो कहेगा वही करना चाहिये सो वह दोनों
उस भँवरे के पास पहुँचे और सब हाल वर्णन किया यह सुन
उसे अति दया उपजी और कहा कि मैं बहुत दिनों से अपने
मित्रों के काम में उद्यत रहता हूं मेरा एक परम मित्र मेंडुक है
और अपने जाति में प्रधान है उचित है कि उससे जा कह
सुनावें वह जो कहे सो करें क्योंकि उसका उपाय निष्फल नहीं होता
फिर वह तीनों मेंडुक के पास गये और वही हाल कहा और
उससे इस कार्य्य में सहायता चाही तब उस मेंडुक ने
उस पक्षी के अंडे के फोड़ने पर दया कर कहा कि हे पक्षी तू
धीर्य्य रख मुझे भी उस के वध करने का ऐसा उपाय सूझ पड़ा है
कि जिस से पहाड़ को भी टुकड़े नहीं वह यह है कि पहिले भँ
वरा उस के पास जावे और अपनी प्रिय वाणी उसे सुनावे जिस से

वह मद मत्त होजाय जब वह मदांध हो जावे तब यह पक्षी बड़ी चोंच वाला उस हाथी की आंखें अपने चोंच से निकाल लेवे कि वह अन्धा होजावे फिर कई दिनके पश्चात जब वह प्यास से व्याकुल होगा तब मैं उसके सन्मुख बोलना आरम्भ करूंगा और वह जानेगा कि जिस स्थान पर मेंडुक बोलता है वहां जल अवश्य होगा सो वह अटकल से आगे चलेगा और मैं पिछले पावों चलूंगा इसी प्रकार धीरे २ बहकाते २ ले चलूंगा इसी प्रकार ले जाते २ किसी गैरे गढ़में डालूंगा फिर उसका कोई शब्द भी न सुनेगा और वहां से प्रलय पर्यन्त भी न निकल सकेगा और भूख और प्यास के मारे मर जावेगा फिर इसी प्रकार वह सबने एक मत होय इसी उपाय से हाथी को मार डाला इतना कह शुक ने कहा कि प्रभावती इन तीन अक्ल जीवों ने एक मत होय ऐसे हाथी को मार डाला और अपना बदला लिया न क्यों इंदी २ उससे लेती है हम भी दोनों हिम्मत बांधेंगे तो काम क्यों न होगा हे प्रभावती अब जा और उस से शीघ्र ही मिल प्रभावती ने चाहा कि जावे इतने में पौफटी और भोर हो गया उस दिन भी जाना उसका बन्द होगया ॥ ८ ॥

अथ उनहत्तरवीं कथा का आरंभ

जब उनहत्तरवें दिन प्रभावती रात को चली तब शुक से पूछा मैं जाती हूं शुक बोला अच्छी बात है परंतु जो इस रात को एक कथा अपने मित्र के सन्मुख वर्णन करे और उस से पूछे जो उत्तर उत्तम देता जानिये कि मनुष्य अति बुद्धिमान है और जो अच्छा उत्तर न देवे निर्बुद्धि समझिये प्रभावती ने कहा वह कौनसी कथा है शुक कहने लगा किसी ग्राम में एक सेठ का पुत्र किसी देवालय में पूजा करने गया और वहां एक लड़की को देखा कि अत्यन्त सुन्दरी है जि-

से पूर्णमासी का चन्द्रमा देख लज्जा उठाता और उसके बालों का काला पन रैन को भुलाता और कद उसका ऐसा था कि सब वृक्ष देख पृथ्वी में गड़ गया और उसकी चटकीली मटकीली चाल को देख चकोर अपनी चाल को धिक्कार देता था ॥ सोरठा ॥ अति हि छबीली चाल चटकीली मन को हरै चितवन अति हि रसाल प्रलय करै दृग बाण सों ॥ कोमल कमल शरीर शुक नासिका सुहावनी थिर नहि मति धीर निरखि अभूषण वस्त्र को ॥ ज्योंही उसपर दृष्टि पड़ी मोहित हो अधीर होगया और उस देवता के चरणों पर गिर पड़ा और यह प्रार्थना की कि यदि मेरे साथ इस लड़की का विवाह होतो अपना शिर काट तुम पर चढ़ाऊंगा इतना कह अपने घर गया और उस लड़की के पिता को जाय कहा कि मेरे साथ अपनी लड़की का विवाह करदे जब यह बात उस के पिता ने सुनी ॥ उसी समय अपनी लड़की का विवाह और गौना उस के साथ करदिया फिर वह दोनों प्रीतिपूर्वक रहने लगे कभी वह इसके घर में चैन करती और कभी वह उस के घर में आनंद करता इसी प्रकार एक मास व्यतीत हुआ संयोग वश वह लड़की अपने सुसराल में थी कि उसके माता पिता ने लड़के और दुलहिन को अपने घर में बुलवाया और वह लड़का अपनी दुलहिन को अपने साथ लिये हुवे चला और एक ब्राह्मण कि वह उसका पुराना मित्र था पीछे से साथ होलिया जिस समय वह लड़का उसी देवालय के निकट पहुंचा कि जहां उस लड़की को देखा था वही प्रण उसे स्मरण हो आया और उसके पूरे करने को अकेला मंदिर में गया और शिर काट देवता के चरणों में धर दिया थोड़ी देर के पीछे वही ब्राह्मण उस देवालय में गया तो क्या देखता है कि मेरे का पुत्र

मरा पड़ा है और उस का शिर भी शरीर से अलग पड़ा है यह हाल देख वह ब्राह्मण डरा और जी में कहने लगा कि जो मैं यहां से जीता जाऊंगा तो लोग यही समझेंगे कि यह लड़का इस जगदू इसने मारा है क्योंकि अबतक सिवाय इसके और कोई नहीं आया निदान उसने बहुत सा विचार कर सोचा कि उत्तम है कि मैं भी अपना शिर काट उसी देवता को चढ़ाऊं यह कह उसने भी अपना शिर काट देवता के चरणों पर रख दिया एक घड़ी के पीछे वह लड़की भी उस देवालय में गई तो उन दोनों को मरा देखा विस्मित होय कहने लगी हाय हाय यह दोनों शिर कटे लहू लुहान पड़े हैं यह क्या अनर्थ है इतना कह उसने भी इच्छा की कि अपना शिर काट चढ़ावे अपने पति के साथ सती होवे इतने में उस देवालय से शब्द सुन पड़ा कि हे लड़की तू इनका शिर इन के धड़ से लगा दे ईश्वर की कृपा से यह जी उठेंगे यह सुन वह प्रसन्न होय अपने पति का शिर ब्राह्मण के शरीर पर और ब्राह्मण का अपने भतीर के धड़ पर रख दिया दोनों जी उठे और स्त्री के आगे खड़े होगये सेठ के शिर और ब्राह्मण के धड़ से झगड़ा होने लगा कि यह मेरी स्त्री है और धड़ ने कहा कि यह मेरी औरत है शुकनीति कथा कह प्रभावती से कहा जो तू उस के बुद्धि की परीक्षा लिया चाहती है यही बात तू उस से पूछ कि वह स्त्री सिर को पहुंचती है या धड़ को प्रभावती ने कहा कि हे शुक तूही कह कि वह शिर को पहुंचती या धड़ को तब शुक ने कहा कि शिर शरीर का अधिपति है इसवास्ते अपने पति के शिर को पहुंचती है प्रभावती यह कथा सुन चाहती थी कि जावे इतने में भोर हुआ और उस का जाना बन्द रहा ॥ इति ॥ ८

अथ सत्तरवीं कथा का प्रारम्भ

नवसत्तरवें दिन प्रभावती भूषणादि से सज पर पुरुष से र

तिकरने को चली शुक से पूछा मैं जाती हूं शुक ने कहा अ-
च्छा जा परंतु एक मेरी कथा सुन मैं तुझसे कहता हूं तू ध्या-
न धर कि कन्नौज के राजा की लड़की अति सुन्दरी थी उसपर
एक योगी मोहित हुआ बहुधा उसके विचार में वे सुध भ
होजाता जब सुधि सँभारता तब अपने चित्त में कहता कि
यह क्या निर्बुद्धता है कि छोटे को बड़े से क्या बराबरी है व-
हतो राजा की पुत्री है तेरे हाथ किस प्रकार पर लगेगी पर-
तु एक दिन अति विह्वल होय यह राजा को कहला भे-
जा कि अपनी पुत्री का विवाह मेरे साथ कर दो कि मैं उसपर
मोहित हूं मेरी फकीरी और अपनी राजे ऐश्वर्य पर दृष्टि न कर
राजा योगी की यह बात सुन कर अति क्रोधित हुआ और
वेला अरे कोई है शीघ्र आवे और इस योगी को दण्ड दे
मन्त्री ने हाथ बांधि कर विनय किया कि हे स्वामी ऐसा
उचित नहीं कि राजा गरीब योगी को अनुचित कहे वा
पीड़ा पहुंचावे उस को इस नगर से निकाला कि मारा जाय
उसके पश्चात मन्त्री ने उस योगी को बुलवाय आज्ञा की
कि हे योगी यदि एक हाथी रुपये से लदा हुआ लावे तो
विश्वास है कि अपनी प्यारी को पावे योगी यह बात सुन
अति प्रसन्न होय धन को ढूंढने लगा तब किसी मनुष्य ने
उससे कहा कि हे योगी जो तू धर्मदत्त नाम सेठ के उस के
पास जावेगा तो अपनी इच्छानुसार जो चाहेगा सो पावे-
गा सो वह योगी तत्काल ही उस धर्मदत्त सेठ के पास गा
या और उस से द्रव्य मांगा ज्यों ही उस सेठ ने सुना त्योंही
एक हाथी धन से लदवाय उस योगी को दिया योगी उ-
स हाथी को लिये हुए राजा के पास आया और कहने ल-
गा कि हे महाराजाधिराज यह हाथी धन से लदा हुआ
लीजिये और अपनी पुत्री का विवाह मेरे साथ कीजिये

तब राजा ने अपने मन्त्री से कहा कि तेरा उपाय कुछ काम न आया वह तो बहुत धन लेही आया अब क्या कीजिये तब उसने विनय की कि यह योगी धर्म दत्त सेठ के पास जाय यह धन हाथी समेत मांगा लाया है क्योंकि इस समय में कोई ऐसा दानी उसके समान नहीं है फिर यह विचार कर उस योगी से कहने लगा कि हे योगी राजा की पुत्री ऐसी न हो कि ऐसे हाथी के बदले हाथ आवे अगर उसे लेना अंगीकार है तो अभी जा और धर्म दत्त सेठ का शिर काट ला वह योगी फिर धर्म्म दत्त सेठ के पास जाय कहने लगा। कि हे दानी बाबा तेरे शिर के बदले मेरे हृदय की अभिलाषा सिद्ध होती है जो तू अपना शिर देगा तो मैं अपनी इच्छा को पाऊंगा सेठ ने कहा हे योगी तू धीर्य्य रख कि यह मेरा शिर परमेश्वर ने इसी वास्ते उत्पन्न किया है कि किसी के काम आवे मैं बहुत काल से इस शिर को हथेली पर धरे हूं कि जो कोई मांगे उसको दूं अब तूने मांगा है सो अब तू मान है अब तू मेरे गले में रस्सी बांध उस राजा के निकट ले चल और उससे कहो कि वह शिर जो तुमने मांगा था धड़ समेत लाया हूं उसने स्वीकार किया तो मैं धड़ से शिर काट लेना और जो उसने कुछ और मांगा तो वह भी लादूंगा तदनन्तर वह योगी सेठ के गले में रस्सी बांध राजा के पास लेगया जब उस राजा ने पुरुषार्थ उस सेठ का देखा अपने स्थान से उठ सेठ के चरणों पर गिर पड़ा और कहने लगा कि सत्य है तेरे समान अब इस संसार में कोई पुरुषार्थी और दानी न होगा यह कह अपनी पुत्री को बुलवाय सेठ को दे कहा कि यह सुन्दरी बांदी है जिसे चाहे उसको दीजिये सुक ने इतना कथा कह प्रभावती से कहा कि हे सुन्दरी मैं भी अपना शिर तेरे अर्थ में गवाऊंगा और तेरे हृदय की अभि-

पाकेहरण करूंगा उत्तम है कि तू शीघ्र ही उसके पास जा और आनन्द उडाय यह सुन प्रभावती ने चाहा कि जावे इतने में भी रहो गया उस दिन भी उस का जाना बन्द होगया ॥

अथ दूसरी कथा प्रारंभ

जब रात्रि हुई तब प्रभावती वस्त्र आभूषण पहिर शुक से विदा होने को गई शुक ने कहा जाव परंतु इस बात का ध्यान रखियो यदि तेरा भरतार तोको दृष्ट पडे तो उस व्योपारी की स्त्री के समान और करना कि वो लज्जित होजावे और तेरी बात रहे प्रभावती ने कहा उस की कथा कौनका है शुक बोला कि किसी नगर में एक व्योपारी अति धनाढ्य था और उस की स्त्री अति सुन्दरी थी संयोग वस वह व्योपारी अन्य देश में व्योपार के निमित गया और उसके पीछे उस की स्त्री ने ऐसा व्यभिचार करना आरम्भ किया कि हर एक मनुष्य के घर जाती और रात्रि भर गीत नृत्य आदि से रिझती कई महीनो के पश्चात उसका पति धन और वस्तु सहित अपने नगर में आया और किसी मकान में उतरा जब एक पहर रात्र व्यतीत हुई एक दूती को बुलवा कहने लगा कि आज मैं अपने घर नहीं जा सक्ता तो कहीं से एक सुन्दर स्त्री ले आवेगी तुझे प्रसन्न करूंगा और दश अशरफी तुझे दूंगा और बीस उसे दूंगा इतना सुनतेही वह बुढिया दौड गई कि यह कोई बडा व्योपारी है कि एक स्त्री के वास्ते बीस अशरफी देताहै यह सोच वह स्त्रियां ढूंढने लगी और ढूंढने २ व्याकुल हुई परन्तु कोई स्त्री हाथ न लगी वह दूती उसी व्योपारी के घर गई और उस की स्त्री से कहने लगी कि आज किसी देश से कोई बडा व्योपारी अति धनाढ्य आया है और अति रूपवान है उसने एक स्त्री मंगवाई है अगर तेरा जी चाहे तो तू ही चल ॥

भोर को २० अशरफी लेकर अपने घर आई यो दूतना सुन वह दूती के साथ हर्ष और उस व्योपारी के पास गई ज्यों। ही अपने पति को देखा त्यों ही पहिचान गई और जी में कहने लगी यह तो मेरा ही पति है अब मैं क्यों करूं दूतने में बड़े शब्द से चिल्लाय कहा कि हमसायो दौड़ो न्याय चुकादो कि छः वर्ष से मेरा पति सौदागरी को गया था मैं। रात दिन इस की राह निहारती थी अब जो आया तो दूसरे हवेली में उतरा और मेरे पास न गया आज मैं इस के आने का समाचार पा अबही मैं आई हूं यदि तुम मेरा। न्याय चुकावो तो उत्तम है नहीं तो मैं न्याधीश के पास जा पुकारूंगी और इस पति को त्याग दूंगी यह सुन पास के लोग इकट्ठे हुए उसने उन लोगों से कहा कि मैं इसकी स्त्री हूं। और यह मेरा भतार है मुझे यह अकेली छोड़ प्रदेश को गया मैं इसी दुःख में आठों पहर रहा करती थी सो परमेश्वर की। कृपा से जो जीते जागते आए तो घर में नहीं आए और सुरूपी रूपवती को भुलाय और दूसरी स्त्री से रति किया चाहते हैं आज मैं यह समाचार सुन आपही आई हूं तुम सब मनुष्य दयावान हो मेरा न्याय चुकादो तब नन्तर उस सौदागर को प्रति मनुष्यने समझाय बुझाय उस स्त्री से मिलाय दिया और यह कोई न समझा कि वह आपही व्यभिचार के वास्ते आई थी उस स्त्री की प्रतिष्ठा चतुराई के कारण नगई पति को अपने स्थान में लाई शुकने इतनी कथा कह प्रभावती से कहा उठ और अपने प्यारे के पास शीघ्र जा इतने में भोर भया

अथ बहत्तरवीं कथा का प्रारंभ

जब सूरज अस्त हुआ और सायंकाल हुआ प्रभावती। शुक के पास आई और विदा मांगी शुकने कहा कि हे प्रभावती मित्रों का उपदेश अवश्य मानना चाहिये जिस॥

प्रकार एक मनुष्य ने अपने मित्र का कहना न माना और दुखित हुआ प्रभावती ने पूछा यह कथा किस प्रकार पर है मुनि कहने लगा किसी नगर में चार मित्र अति धनाढ्य थे सो योगवश वह चारों निर्धन होय किसी बुद्धि मान मनुष्य के निकट गए और हर एक ने अपना २ समाचार उसके सन्मुख वर्णन किया उस बुद्धि मान मनुष्य को उन पर दया आई और एक २ मुद्रा उन को देय कहा कि यह मुद्रा अपने २ शिर पर रख लो और चले जाओ जिस के शिर का मुद्रा जिस स्थान पर गिरे वह उस जगह को खोदे जो उस में से निकले वह ले-फिर वह चारों एक २ मुद्रा अपने २ शिर पर रख किसी ओर को चले जब कितनी दूर तक गये एक के शिर का मुद्रा गिरा उस ने जो उस स्थान को खोदा तो तांबा निकला उसने उन तीनों से कहा कि मैं इस तांबे को सोने से उत्तम जानता हूं जो तुम चाहो तो मेरे साथ यहां रहो परंतु किसी का कहना न माना और आगे चले इतने में दूसरे मनुष्य के शिर से मोहरा गिरा उसने जो पृथ्वी खोदी रूपा निकला तब उसने उन दोनों से कहा तुम हमारे पास रहो यह रूपा हमारी सम्पूर्ण आयु को बहुत है इस को अपना ही समझो परंतु किसी ने उसका कहना न माना और आगे चले इतने में तीसरे के शिर का मोहरा गिरा उस ने भी वह पृथ्वी खोदी उस में से स्वर्ण निकला तब हर्षित होय कहने लगा कि हे मित्र इस से कोई वस्तु उत्तम नहीं कि हम तुम यहीं रहें उसने कहा कि जो मैं जाऊंगा मणि माणिक की खान पाऊंगा यह कह आगे चला जब उस के शिर का मोहरा गिरा तो पृथ्वी खोदने से लोहा पाया यह देख अति विस्मित हुआ और विचारने लगा कि मैंने क्यों स्वर्ण को छोड़ा और अपने मित्र का कहना न माना यह सत्य है ॥ दोहा ॥ जो सदैव निज मित्र को कह्यो ॥

न मानत आहि वह अवश्य पछितात है यामें संशय
नाहि उस लोहे को छोड़ उसी मनुष्य समीप जिसने स्व-
र्ण की खान पाई थी गया वहां उस को न पाया और सोना
भी हाथन आया तब तीसरे रूपे वाले के पास गया उसेभी
न पाया फिर तांबे वाले के निकट गया उसे भी न पाया अप-
नी दुर्भाग्यता पर रुदन करने लगा और कहने लगा कि अ-
पने पास्थ से कोई भी अधिक नहीं पाता फिर उसी बुद्धि
मान के गृह पर गया उसे भी वहां न पाया बेचारा अत्यन्त
विस्मित हुआ शुक इतनी कथा प्रभावती से कहने ल-
गा कि जो अपने मित्रों का कहना नहीं मानता वह अव-
श्य गढ़ता पाता है अब जा परंतु चैतन्य रहियो प्रभावती ने
चाहा कि जावे इतने में एक चेटी ने आकर खबर दी कि
सेठ का बेटा आयो है तब पिता ने पुत्र को छाती से लगाया
और बधाई दी फिर राज देव सेठ के राजा पास गया और रत्न
राजा के भेट किये राजा देख बहुत खुश भया और वस्त्र आ-
भूषण दे विदा किया अपने घर आया फिर मदन सेन प्र-
भावती के पास गया और मिला फिर हाल पूछा जब भीतर
को चला तब शुक बोला चिरंजीव कहो मदन सेन राम राम
किया कुशल पूछा और कहा सारो कहां है शुक बोला ये
हाल पीछे सुननो तब मदन सेन खाना खाया फिर पान खा
दूध पी पलंग पर जा सोया और प्रभावती ने भी खाना खा
या और सिंगार कर मदन सेन के पास गई तब मदन सेन
ने प्रभावती से प्रीत की वार्ता करने का आरम्भ
किया फिर दोनों ने अत्यन्त खुशी के साथ रस भोग किया
तब प्रभावती बड़े आनंद को प्राप्त भई तब प्रभावती ने क-
हा मेरा धर्म शुक ने राखा है तब मदन सेन शुक का फिज
गमगाया और प्रभावती से कहा कि सारो कहां है तब ॥

बोली कि तुमारे गये पीछे एक घड़ी के मोको विरह उप-
ज्यो तब एक दूती आई और मोको प्रमोधी तब मेरे भी म
नमें यह आई कि और ही पुरुष से भोग कीजिये यह विचार
सिंगार कर मैं चली ता समय सासू नेरोका बुरा लगा सो मैंने
मार दई ता पीछे शुक सो पूछी शुक ने ७२ दिन कथा
कर दिन वितये और धर्म राख लिया मैं शुक के प्रताप सों
रहीये कही तब मदन सेन शुक से कही कि शुक तुम सो
चतुर कोई नही और तुम्हार ही प्रताप सों मोको स्त्री प्राप्त
भई इस तरह कहा तब वे शुक बोला मदन सेन तुम अपने
पिता पास जाकर मोको आज्ञा मागो सो मैं घर जाऊं क्योंकि
मैं गंधर्व हूं ऋषीश्वर के शाप सों शुक भया हूं तब मदन सेन
पिंजरा ले सेठ के पास गया और पिंजरा देके सब हाल कहा
तब सेठ ने शुक से कहा कि उदास क्यों हो शुक ने कहा तुमारे
पास रह के कोई उदास न होगा अब मुझे आज्ञा दो तब वि-
दा भया पर्वत को गया देह छोड़ गंधर्व भया और स्त्री पुरु
ष दोनो स्वर्ग में भोग करने लगे यहां मदन सेन अरु प्रभाव-
ती भोग करने लगे ॥ + ॥

॥ ४ ॥ इति शुक बहत्तरी भाषा समाप्तः शुभम् ॥ ४ ॥

लिपिकृतं महावीर प्रसाद ब्राह्मण ॥

